

राजेन्द्रकुमार शर्मा

'एक राग दो स्वर' ने दर्शकों को इतना हंसाया कि मालूम होता था जैसे किसी देवी संगीतज्ञ ने कोई हास्यराग छेड़ दिया हो जिसने वेदना के स्वर सदा के लिए समाप्त कर दिए हों। नाटक के शुरू से ही हंसी को जो लहर चली वह अन्त तक बराबर बनी रही। यहां तक कि सूचना—प्रसारण मन्त्री श्री कालीदास शाह और संसदसदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री की भी खिलखिलाहट भवन में गूंजती रही।

इस कथा को चटपटे संवादों, मंजे हुए कथानक और सहज अभिनय ने बहुत ही रोचक बना दिया जिससे खचाखच भरे हुए भवन में दो घंटे तक कहकहे ही गूंजते रहे। श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा लिखित यह नाटक अनेक बार प्रस्तुत करने योग्य है।

'एक राग दो स्वर' ने राजधानी में पेश होने वाले नाटकों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

हिन्दुस्तान

रंगशाला अपने इस नाटक के लिए बधाई का पात्र है।

नवभारत टाइम्स

इसके हर वाक्य से हसी फूट पड़ती है।

ट्रिब्यून

एक राग दो स्वर

(नाटक)

लेखक
राजेन्द्रकुमार शर्मा



पी० के० पब्लिकेशन्ज

३०७२, प्रताप स्ट्रीट, गोला मार्केट
दिल्ली-११०००६

प्रकाशक : प्रेम गोपाल मित्तल
पी० के० पब्लिकेशन्ज
३०७२, प्रताप स्ट्रीट, गोला मार्केट,
दिल्ली-११०००६

प्रथम संस्करण : जून १९७३
मूल्य : चार रुपये

EK Raag Do Swar
By Rajendra Kumar Sharma
Price Rs. 4/-

मुद्रक :
वार्ष्णेय प्रिंटिंग प्रेस,
विश्वास नगर, शाहदरा,
दिल्ली-३२

बंधुवर—श्री लखनदेवप्रसाद श्रीवास्तव को

राजेन्द्र कुमार शर्मा
सैक्टर ३/५४८
राम कृष्ण पुरम
नई दिल्ली-२३

इस नाटक को सबसे पहले रंगशाला ने ७ मई १९६८ को फाइन आर्टस थियेटर, नई दिल्ली में प्रस्तुत किया। रंगशाला तब से अब तक इस नाटक को ६३ बार खेल चुकी है। रंग-शाला ने इस नाटक के चण्डीगढ़, भोपाल, अजमेर और नैनीताल में भी कई सफल प्रदर्शन किए हैं। इन प्रदर्शनों में निम्नलिखित कलाकारों ने भाग लिया।

भूमिकायें (प्रवेशानुसार)

○

नरेन्द्र : तिलक राज कपूर
पिंकी : पिंकी
सरला : श्रीमती आनन्द कौर
सुरेन्द्र : राजेन्द्र कुमार शर्मा
राधा : श्रीमती दमयन्ती पुरी
कु० शकुन्तला धवन
फूलचन्द : शंकर लाल कपूर
अनिल : सुरेन्द्र सेठी
मामा : चैतन्य स्वरूप नागर
ओमप्रकाश राय
हरी नन्द शर्मा

○

निर्देशन : राजेन्द्र कुमार शर्मा

एक राग दो स्वर

[नाटक आरम्भ होने से कुछ क्षरा पूर्व सुरेन्द्र और सरला दर्शकों के बीच आकर बैठ जाते हैं। इतने में नरेन्द्र मंच पर परदे के आगे आता है।]

नरेन्द्र : (दर्शकों से) नाटक प्रेमियों, नमस्कार ! मैं आपका स्वागत करता हूं। आप पूछेंगे मैं कौन हूं, दर्शक या अभिनेता ? वास्तव में हम सब दर्शक भी हैं और अभिनेता भी। दूसरों के जीवन की घटनायें, कठिनाइयां, उलझनें हमारे लिये नाटक होती हैं और वही हमारे जीवन में हमारे लिये एक समस्या बन जाती हैं। एक मुसीबत हो जाती हैं। लीजिये मैं भी क्या बेवक्त दर्शन शास्त्र की यह गुत्थी सुलझाने में लग गया। आप लोग तो देखने आये हैं नाटक 'एक राग दो स्वर'। यह नाटक एक आधुनिक पति-पत्नी की कहानी है जो हर समय अपने अधिकारों की नाप-तौल में लगे रहते हैं। (सुरेन्द्र और सरला जो दर्शकों के बीच बैठे हैं आपस में जोर जोर से झगड़ना शुरू कर देते हैं।)

नरेन्द्र : आप लोग कौन हैं ? क्यों सबको डिसटर्ब कर रहे हैं।

एक दर्शक : इन्हें बाहर निकालो।

नरेन्द्र : आप लोग इधर आइये (क्रोध से) इधर

आइये।

एक दर्शक : हां, हां। उधर चलिये। जरा हम भी तो देखें आप लोग कौन हैं।

[सुरेन्द्र और सरला लड़ते-लड़ते मंच पर आ जाते हैं।]

नरेन्द्र : यह क्या वदतमीजी है। आप लोग तो पढ़े-लिखे मालूम होते हैं। आप सवको क्यों डिसटर्ब कर रहे हैं? आप कौन हैं?

सुरेन्द्र : मैं सुरेन्द्र हूं।

नरेन्द्र : यह कौन हैं?

सुरेन्द्र : इन्हीं से पूछ लीजिये।

नरेन्द्र : (सरला से) आप कौन हैं?

सरला : मैं सरला हूं।

नरेन्द्र : यह कौन हैं?

सरला : इन्होंने वता तो दिया।

नरेन्द्र : (सरला से) आप नौकरी करती हैं?

सरला : जी हां। और मेरी तनख्वाह इनसे पचास रुपये अधिक है।

नरेन्द्र : आप लोग यहां कैसे आये हैं?

सुरेन्द्र : पास लेकर।

नरेन्द्र : आप लोग तो तमाशा देखने आये थे और खुद ही तमाशा बन गये। आखिर क्या बात है? आप लोग क्यों लड़ रहे हैं?

सरला : चलते समय मैंने इनसे कहा था कि ताला लगा दो। इन्होंनें ताला नहीं लगाया और घर खुला छोड़ आये हैं।

सुरेन्द्र : तुम झूठ बोल रही हो। ताला लगानें के लिये मैंने तुम्हें कहा था।

सरला : मैं पूछती हूं। ताला लगाना औरत का काम है?

सुरेन्द्र : आप ही बताइये साहब, ताला लगाना पुरुष का काम है ?

सरला : तुम खा-मा-खां बहस करते हो ।

सुरेन्द्र : तुम्हें तो लड़ने की आदत है ।

नरेन्द्र : (दोनों के बीच में आकर) प्लीज, प्लीज, प्लीज । मेरी मानिये तो आप लोग घर जाइये और घर को ताला लगा आइये वरना आप लोगों के इस झगड़े में आपका घर लुट जायेगा । जाइये-जाइये ।

[सुरेन्द्र और सरला चले जाते हैं ।]

नरेन्द्र : यह है, मौडर्न हसबैंड एण्ड वाइफ । आधुनिक पति-पत्नी, जो बिना बात लड़ते हैं । हर बात पर लड़ते हैं, बात-बात पर लड़ते हैं । घर के बाहर इनका यह हाल है तो इनके घर में क्या होता होगा । तो आइये साहब इनके घर ही चलते हैं और चुपके से झांक कर देखते हैं वहां क्या होता है । इससे अच्छा नाटक और कहां देखने को मिलेगा ।

पहला अंक

[रंगमंच के बीच में कुछ भाग खुला है। इसके पीछे दीवार है उसके दाईं ओर रसोई के लिए रास्ता है और बाईं तरफ एक कमरे का दरवाजा है मंच के दाईं तरफ सोफा सैट रखा है। सोफा सैट के पीछे एक रैक है जिस पर सजावट की वस्तुएं रखी हुई हैं। मंच के बाईं तरफ आगे को बाहर से आने का दरवाजा है। दाईं तरफ खाने की मेज है जिस पर चार कुर्सियां हैं मेज के आगे दाईं तरफ एक और दरवाजा है जिससे रास्ता एक भीतरी कमरे को है। पीछे दीवार पर एक तरफ सरला की फोटो टंगी है और दूसरी तरफ सुरेन्द्र की। इसके अतिरिक्त यह बैठक आधुनिक मध्यम वर्ग की तरह सजाई जा सकती है। जब पर्दा उठता है तो पिंकी बस्ता ठीक कर रही है ?

सरला : (नेपथ्य से) पिंकी ! पिंकी ! अभी तू यहीं है?

पिंकी : हां मम्मी।

सरला : (नेपथ्य से) तू स्कूल नहीं गई अभी तक ?

पिंकी : यह भी कोई पूछने को बात है। स्कूल चली जाती तो यहां कैसे होती !

सरला : (नेपथ्य से) बहुत शैतान हो गई है।

सुरेन्द्र : (नेपथ्य से) अपनी मां पर गई है।

सरला : (नेपथ्य से) प्लीज कीप क्वाइट। तुम चुप रहो जी !

[पिंकी अपनी पैंसिल इधर-उधर ढूंढ़ती है।]

पिंकी : मम्मी, मम्मी मेरी पैंसिल कहां है ?

सरला : (प्रवेश करते हुए) अपने पापा से पूछो। वो ही

रात लिख रहे थे, पचास दफा कहा है कि बच्चों की पैंसिल मत लिया करो, पर कोई सुनता ही नहीं ।

[सरला अन्दर चली जाती है]

पिंकी : पापा, पापा। पैंसिल कहां है ?

सुरेन्द्र : (प्रवेश करते हुए) अपनी मम्मी से पूछो। कल रात वो तुम्हारी पैंसिल से सिर खुजा रही थी। पचास दफा कहा है कि सिर पेचकस से खुजा लिया करो, पर मेरी कोई सुनता ही नहीं ।

[सुरेन्द्र अन्दर चला जाता है]

[राधा का प्रवेश]

राधा : (एक डिब्बा पिंको को देती है।) यह लो बिटिया, इसमें दो टोस्ट एक अंडा और एक चीकू रख दिया है ।

पिंकी : गुड !

राधा : गुड़ ! गुड़ तो घर में है ही नहीं। बिटिया गुड़ तो हम गरीब लोग खावें।

पिंकी : गुड का अंग्रेजी में मतलब है अच्छा। वैरी गुड माने बहुत अच्छा।

राधा : तुम तो अंग्रेजी गुड़ की बात कर रही थीं। और मैं समझी कि तुम देसी गुड़ की बात कर रही हो। नौकर को अंग्रेजी में क्या कहें ?

पिंकी : सरवैन्ट !

[नेपथ्य से]

सरला : राधा, पिंकी को हरा स्वेटर पहना देना।

राधा : अच्छा बीवी जी।

[राधा अन्दर चली जाती है]

[सुरेन्द्र का प्रवेश]

सुरेन्द्र : (पैंसिल देते हुए) यह ले पैंसिल। जल्दी कर तुझे स्कूल को देर हो गई है ।

पिंकी : अभी देर कहां हुई है। हमारी मैडम तो छुट्टी से वापस नहीं आईं। आजकल दूसरी मैडम पढ़ाती हैं।
सुरेन्द्र : तुम्हें मिस भाटिया पढ़ाती हैं ?
पिंकी : वो एक महीने से छुट्टी पर हैं। उनकी शादी हो गई है।
सुरेन्द्र : हो जाने दे। तू स्कूल जा। जल्दी कर।
पिंकी : पापा कल एक मैडम दूसरी मैडम से कह रही थी कि मिस भाटिया हनीमून के बाद आएंगी। यह हनीमून क्या होता है ?
सुरेन्द्र : हनीमून ! जब लड़के और लड़की की शादी हो जाती है उसके बाद···उसके बाद···
पिंकी : उसके बाद क्या होता है पापा ?
सुरेन्द्र : उसके बाद तो आदमी उमर भर पछताता है।
पिंकी : पापा हनीमून का क्या मतलब है ?
[राधा हरा स्वेटर लेकर आ जाती है।]
सुरेन्द्र : हनीमून का मतलब होता है सैर, शादी के बाद जब लड़का और लड़की सैर करने जाते हैं, घूमने जाते हैं तो उसे हनीमून कहते हैं।
पिंकी : राधा, शादी के बाद तू भी हनीमून पर गई थी ?
राधा : मैं तो शादी से पहले ही हनीमून पर हो आई थी।
पिंकी : किसके साथ ?
राधा : अपनी अम्मा के साथ। सारे तीरथ घूम के आई थी।
सुरेन्द्र : यह हरा स्वेटर नहीं, वो लाल वाला पहन ले।
पिंकी : नहीं, मैं यही पहन जाती हूं।
सुरेन्द्र : नहीं, अच्छे बच्चे कहना मानते हैं। यह स्वेटर

पतला है, लाल वाला पहन जा। इसे लाल वाला स्वेटर पहना दे।

राधा : बीबी जी ने कहा था कि हरा वाला।

सुरेन्द्र : व्हाट बीबी जी, जो मैं कहता हूं वो करो।

[राधा लाल स्वेटर लेने चली जाती है।]

सुरेन्द्र : तूने होम टास्क कर लिया है न?

पिंकी : हां डैडी, चार सवाल मिले थे। दो का जवाब नहीं मिला और दो मुझ से निकले नहीं।

सुरेन्द्र : सवाल अपनी ममी से पूछ लिए होते। देखे उन्हें आते हैं कि नहीं।

[सरला का प्रवेश]

सरला : ममी की तो मैट्रिक में फर्स्ट डिवीजन थी।

सुरेन्द्र : क्या कहा, आपकी ममी की?

सरला : मेरी ममी की नहीं मेरी। इनकी तरह नहीं कि बी० ए० में तीसरे साल भी थर्ड डिवीजन ही आई।

सुरेन्द्र : ओह! मुझे तो आज दफ्तर जल्दी जाना है।

[सुरेन्द्र अन्दर चला जाता है]

[राधा का प्रवेश। पिंकी को लाल स्वेटर पहनाती है।]

सरला : यह लाल वाला नहीं। मैंने तो कहा था हरा वाला पहनाना।

राधा : बाबू जी ने कहा था कि लाल वाला…

सरला : व्हाट बाबू जी, जो मैं कहती हूं वो करो।

पिंकी : आप कहती हैं हरा वाला पहनो, पापा कहते हैं कि लाल वाला पहनो। मैं दोनों पहन जाती हूं।

राधा : मैं बताऊं तू कोट पहन जा।

सरला : आज सरदी ज्यादा है कोट ही पहन जा।

[राधा कोट लेने चली जाती है]

पिंकी : मेरी परसों फीस देनी है।

सरला : मुझे मालूम है।

[राधा कोट लाकर उसे पहना देती है]

सरला : अब जा भो। बस आने वाली होगी।

पिंकी : ममी ममी टाटा।

सरला : टाटा !

पिंकी : पापा, पापा।

सरला : पापा की बच्ची। पापा को आकर टाटा कर लेना। वस निकल गई तो।

[राधा पिंकी को लेकर बाहर चली जाती है सरला अखबार लेकर पढ़ने लगती है]

सुरेन्द्र : (अन्दर से) राधा, राधा।

सरला : तुम तो बेकार चिल्ला रहे हो।

सुरेन्द्र : (प्रवेश करते हुए) क्या मतलब ?

सरला : राधा यहां नहीं हैं। पिंकी को छोड़ने गई है।

सुरेन्द्र : रात में एक किताब लाया था वो कहां है ?

सरला : मैं वताऊं ?

सुरेन्द्र : मैं आप से ही पूछ रहा हूं।

सरला : जहां तुमने रखी थी वहीं होगी।

सुरेन्द्र : वहां नहीं है।

सरला : तो फिर...तो फिर...कहीं और होगी।

सुरेन्द्र : ऊहं (अन्दर चला जाता है।)

[सरला अखबार पढ़ने लगती है। थोड़ी देर के बाद राधा आती है]

सरला : छोड़ आई ?

राधा : जी बीबी जी, (कुछ ठहर कर) बीबी जी कल कोयला खतम हो जायेगा।

सरला : दो मन कोयला मंगवाया था न ?

राधा : आपको पता होगा बीबी जो। आपने ही मंगवाया था।

सरला : दो मन कोयला बीस दिन में कहां चला गया ?

राधा : अंगीठी में बीबी जी।

सरला : यह तो मुझे भी मालूम है। अच्छा देख अंडे पड़े हैं न ?

राधा : जी हां।

सरला : नाश्ते के लिए आमलेट बना देना।

राधा : बहुत अच्छा बीबी जी।

[राधा अन्दर चली जाती है सरला अखबार पढ़ने लगती है, इतने में सुरेन्द्र आ जाता है।]

सुरेन्द्र : जरा अखबार देना।

सरला : बस पांच मिनट।

सुरेन्द्र : मुझे दफ्तर को देर हो रही है।

सरला : तुम्हारा तो सरकारी दफ्तर है। पन्द्रह मिनट देर से पहुंच जाओगे तो भी कोई हर्ज नहीं।

सुरेन्द्र : तुम नहीं जानतीं, आज से हमारा नया अफसर आया है, उसने नाक में दम कर दिया है।

सरला : तुम लोग काम भी तो नहीं करते।

सुरेन्द्र . स्कूल में जो तुम लोग पढ़ाती हो, वो भी सब पता है।

सरला : : हम लोग तो पांच मिनट भी क्लास में देर से पहुंचें तो आफत आ जाती है।

[सुरेन्द्र अखबार उठाकर एक तरफ चलता है।]

सरला : (सुरेन्द्र के हाथ से अखबार ले लेती है) इसमें कोई खास खबर नहीं है। तुम रात को पढ़ लेना।

सुरेन्द्र : अच्छा बाबा तुम्हीं पढ़ लो।

[सरला अखबार पढ़ती है]

सरला. : तुमने यह खबर पढ़ी है ?

सुरेन्द्र : तुम पढ़ने दो तो पढ़ू

सरला : आज श्री अन्याय सिंह की अदालत में श्रीमती पहलवान कौर ने यह बयान दिया कि उनके पति श्री कमजोर सिंह ने उन्हें शादी की तीसरी वर्ष गांठ पर रात के तीन बजे घर से मार पीट कर निकाल दिया।

सुरेन्द्र : अच्छा किया।

सरला : अदालत ने श्री कमजोर सिंह के नाम समन जारी कर दिए हैं।

ईडियट। यह आदमी भी पूरे जानवर होते हैं।

सुरेन्द्र : जी हां और औरतें इन्हीं जानवरों के साथ रहती हैं।

सरला : मैं कहती हूं ऐसे आदमी को तो गोली मार देनी चाहिए।

सुरेन्द्र : तो मार दो गोली, कौन मना करता है।

[सरला अखबार पटक देती है, सुरेन्द्र उठा लेता है]

सुरेन्द्र : सुनो।

सरला : सुनाओ।

सुरेन्द्र : तुमने यह खबर पढ़ी है।

सावित्री ने सत्यबान को ज़हर दे दिया। दिल्ली पुलिस ने आज यहां श्रीमती सावित्री देवी को अपने पति सत्यवान को ज़हर देने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया। कितनी मक्कार होती हैं यह औरतें।

सरला : पर आदमियों से तो इस बात में भी कम हैं।

सुरेन्द्र : ऐसी औरतों को तो फांसी लगा देनी चाहिए।

सरला : तो लगा दो फांसी, कौन रोकता है।

[सरला अन्दर चली जाती है। सुरेन्द्र अखबार के पन्ने उलटता है।]

सुरेन्द्र : राधा, राधा।

राधा : जी वाबू जी ।
सुरेन्द्र : देखो अण्डे हैं न !
राधा : जी बाबू जी !
सुरेन्द्र : देखो ये अण्डे फराई कर देना ।
राधा : बीबी जी कह रहीं थी कि आमलेट बनेगा ।
सुरेन्द्र : व्हाट बीबी जी, उनको क्या मालूम ? आमलेट बनाने से विटामिन मर जाते हैं ।

[सरला का प्रवेश]

सरला : सो ह्वाट, मैं मरे हुऐ विटामिन ही खा लूंगी ।
सुरेन्द्र : राधा, अण्डे फ्राई होंगे ।
सरला : नहीं आमलेट बनेगा ।
सुरेन्द्र : फ्राई होंगे ।
सरला : आमलेट बनेगा ।
सुरेन्द्र : तुम हर बात में ज़िद करती हो ।
सरला : तुम मेरी हर बात काटते हो ।
राधा : इसमें झगड़े की कौन-सी बात है मैं बीबी जी का आमलेट बना दूंगी और बाबू जी को फराई कर दूंगी ।
सरला : शटअप ।
सुरेन्द्र : शटअप ।
राधा : हाय दइया, एक दूसरे को अंग्रेजी में गाली देते हैं ।

[दोनों अन्दर चले जाते हैं, राधा कोई तस्वीर झाड़ने लगती है]

[दरवाजे पर दस्तक]

राधा : कौन है ?
फूलचन्द : मैं हूं ?

[फूलचन्द अन्दर आ जाता है ।]

राधा : क्या है रे ?
फूलचन्द : यह तेरी चप्पल गठवा के लाया हूं । दस पैसे

मांग रहा था। सात पैसे दे दिए हैं।

राधा : तू क्यों उठा लाया है ? मैं अपने आप ठीक करवा लेती।

फूलचन्द : और शाम तक नंगे पैर फिरती। कितनी ठंड पड़ रही है। कहते हैं कि नंगे पैर फिरने से ठंड लग जाती है। और अगर तुझे ठंड लग जाए तो.........

राधा : तो क्या होगा ?

फूलचन्द : मैं तो ठंडा ही हो जाऊंगा।

राधा : ऐसे क्यों कहे, ठंडे हों तेरे दुश्मन।

फूलचन्द : बाबू जी और बीवी जी काम पै गए क्या ?

राधा : नहीं, बस जाने वाले हैं। तू थोड़ी देर के बाद आ जाइयो।

[फूलचन्द बाहर चला जाता है।]

[सुरेन्द्र अन्दर से आता है और फूलचन्द को जाते हुए देखता है।]

सुरेन्द्र : राधा, रात मैं एक किताब लाया था।

राधा : (किताब उठाकर देते हुए) यह रही।

सुरेन्द्र : यह तुम्हारा वो था ?

राधा : जी बाबू जी। इसे साथ वाली कोठी में माली की नौकरी मिल गई है।

सुरेन्द्र : क्या नाम है इसका ?

राधा : (शरमा कर) बाबू जी वो बाग में क्या होवे ?

सुरेन्द्र : पेड़ पौधे होते हैं।

राधा : नहीं बाबू जी। माला काहे की होती है ?

सुरेन्द्र : मोतियों की।

राधा : नहीं, बाबू जी। गुलाब का क्या होता है ?

सुरेन्द्र : क्या मतलब ?

राधा : बाबू जी आप समझते नहीं हैं। वो गुलदस्ते में क्या लगाते हैं ?

सुरेन्द्र : फूल।
राधा : हां बाबू जी। और रात को क्या निकलता है ?
सुरेन्द्र : चांद।
राधा : बस दानों को मिला दीजिए।
सुरेन्द्र : ओह, फूलचन्द नाम होगा।
राधा : (शरमा कर) जी हां, बाबू जी।
सुरेन्द्र : तुम उसका नाम नहीं लेती ?
राधा : बाबू जी पति तो परमेश्वर होता है।
सुरेन्द्र : लकी, पत्नी हो तो ऐसी हो। सचमुच तुम्हारा पति बहुत भाग्यशाली है जिसे तुम जैसी पत्नी मिली है। कितने साल हुए हैं तुम्हारी शादी को ?
राधा : मेरी शादी तो बचपन में ही हो गई थी। मैं तब दस बरस की थी।
सुरेन्द्र : तब ये क्या करता था ?
राधा : सारा दिन कबड्डी खेलता था।
सरला : (अन्दर से) राधा, राधा।
राधा : जी बीबी जी।

[सरला का प्रवेश, सुरेन्द्र अन्दर चला जाता है।]

सरला : नाश्ता तैयार हो गया क्या ?
राधा : बस तैयार ही समझो।
सरला : यह चप्पल कहां से आई ?
राधा : वह दे गया है।
सरला : क्या तुम्हारा माली आया था ?
राधा : माली क्या, बीबी जी मेरा तो मालिक है।
सरला : मेरा भी यही मतलब है। क्या कहता था ?
राधा : बस मेरी चप्पल टूट गई थी सो मैं आज नंगे पैर ही आ गई थी। वो मेरी चप्पल गठवा के दे गया है। कहता था, ठंड लग जाएगी।

सरला : तो तुम्हारी चप्पल ले के आया था।
राधा : हां बीबी जी।
सरला : तुम्हारा बहुत ख्याल रखता है।
राधा : हां बीबी जी।
सरला : लकी, पति हो तो ऐसा हो। सचमुच तुम बहुत भाग्यशालिनी हो जो तुम्हें ऐसा पति मिला है। तुम्हें बहुत प्यार करता है ?
राधा : पति और पत्नी में तो प्यार होवे ही है।
सरला : होता होगा। आज मैं कुछ देर से आऊंगी। पिंकी को स्कूल से लौटने पर दूध और फल दे देना।
राधा : बहुत अच्छा बीबी जी। दूध तो खराब हो गया। बीबी जी वो ठंडी मशीन ले लो न, उसमें कोई चीज खराब नहीं होवे।
सरला : हां फ्रिज लेने की तो मैं भी सोच रही हूं।

[सुरेन्द्र का प्रवेश]

सुरेन्द्र : फ्रिज तो ले ही लेना चाहिए।
सरला : (क्रोध से) ह्वाट, क्या कहा ?
सुरेन्द्र : (क्रोध से) मैं कहता हूं……
सरला : (क्रोध से) तुम कुछ भी कहो। मैं कहे देती हूं कि मैं फ्रिज ले के छोड़ूंगी।
सुरेन्द्र : (जोर से) मैं भी तो यही कहता हूं।
सरला : (क्रोध से) क्या ?
सुरेन्द्र : (जोर से) कि फ्रिज ले लेना चाहिए।
सरला : थैंक गाड, तुमने मेरी कोई बात तो मानी।
सुरेन्द्र : तुम्हारी मानने वाली तो मैं हर बात मान जाता हूं।
सरला : बस रहने दो। फ्रिज कितने का आएगा ?
सुरेन्द्र : तीन हजार में।
सरला : फ्रिज है तो बहुत काम की चीज़।

सुरेन्द्र : इसमें क्या शक है ?

सरला : फ्रिज घर में हो तो कोई चीज खराब नहीं होती।

सुरेन्द्र : और गर्मियों में ठंडी चीजें वैसे भी खाने में अच्छी लगती हैं।

सुरेन्द्र : मुझे छः सात सौ रुपये एरियर मिलने वाला है।

सरला : बाकी पैसे मैं दे दूंगी। बस शाम को फ्रिज देखने चलेंगे और रमेश के यहां भी हो आएंगे।

सुरेन्द्र : गुड, तुम बहुत अच्छी हो।

सरला : आदमी तो तुम भी बुरे नहीं हो।

सुरेन्द्र : यह तो आप ठीक कहती हैं, अगर तुम बहस न किया करो तो……

सरला : बहस मैं करती हूं ?

सुरेन्द्र : और नहीं तो क्या मैं करता हूं ?

सरला : जी, झगड़े की बात हमेशा तुम शुरू करते हो।

सुरेन्द्र : जी नहीं, यह तुम्हारी गलत फहमी है।

सरला : जो मैं कहती हूं अगर वो तुम चुपचाप सुन लिया करो और हर काम वैसे ही किया करो जैसे मैं चाहती हूं तो हम लोगों में कभी झगड़ा नहीं हो सकता।

सुरेन्द्र : बहुत खूब, पर मुश्किल तो यह है कि ईश्वर ने मुझे भी ज़बान दी है और दिमाग भी।

सरला : ईश्वर ने तुम्हें जुबान और दिमाग दिया तो है लेकिन फिटिंग में कसर रह गई। जुबान कुछ ज्यादा तेज हो गई और दिमाग के पुर्जे कुछ ढीले रह गए।

सुरेन्द्र : मैंने कुछ कहा तो फिर……खैर छोड़ो।

सरला : छोड़ो क्या ? जो जी में आए कह डालो।

भगवान् ने तुम्हें जुबान जो दी है।

सुरेन्द्र : चलो इस वक्त मैं ब्रैक लगा लेता हूं। हां तुम फ्रिज लेने की बात कर रही थीं।

सरला : बात क्या करनी, अगले महीने फ्रिज ल आयेंगे।

सुरेन्द्र : कौन-सा फ्रिज लेना है ?

सरला : न्यूलाइट।

सुरेन्द्र : डायमंड।

सरला : तुम्हें क्या पता कौन-सा फ्रिज अच्छा होता है ?

सुरेन्द्र : और तुम तो जैसे फ्रिज की इंजीनियर हो।

सरला : मेरी एक सहेली ने डायमंड लिया। साल भर में ही खराब हो गया।

सुरेन्द्र : यह तो तुम यूं ही कह रही हो। मैं कहे देता हूं डायमंड फ्रिज ही लूंगा।

सरला : और मैं न्यूलाइट।

सुरेन्द्र : न्यूलाइट तो देखने में भी अच्छा नहीं लगता।

सरला : तुम लोग तो सूरत देखते हो।

सुरेन्द्र : और तुम क्या देखती हो ?

सरला : सीरत।

[राधा का प्रवेश]

राधा : नाश्ता तैयार है।

सरला : (घड़ी देखकर) ओफ यह तो सवा नौ बज गए।

सुरेन्द्र : नाश्ता लगाओ।

[दोनों अन्दर भाग जाते हैं। राधा मेज पर नाश्ता रखती है और फिर जाने लगती है, इतने में सुरेन्द्र आता है।]

सुरेन्द्र : मेरे हाथ में टाई थी, पता नहीं कहां रख दी, राधा जरा देखना।

[राधा इधर-उधर टाई देखती है। सुरेन्द्र अन्दर चला जाता है।]

[सरला का प्रवेश]

सरला : मेरे हाथ में पैन था, पता नहीं कहां रख दिया। राधा तू क्या कर रही है?

राधा : बाबू जी की टाई ढूंढ रही हूं।

सरला : लीव इट। मेरा पैन देख, अभी तो मेरे हाथ में था।

[सुरेन्द्र का प्रवेश]

सुरेन्द्र : टाई मिली?

राधा : मैं तो बीबी जी का पैन ढूंड रही हूं।

सुरेन्द्र : पैन को मार गोली। पहले मेरी टाई देख।

[तीनों रंगमंच पर जल्दी-जल्दी टाई और पैन तलाश करते हैं। इतने में सरला की निगाह सुरेन्द्र की जेब पर जाती है जिसमें टाई है और उसका कुछ भाग जेब के बाहर है।]

सरला : तुम्हारी टाई इस कमरे में नहीं है।

सुरेन्द्र : तो और कहाँ है?

सरला : तुम्हारी जेब में।

सुरेन्द्र : ओह, (जेब से टाई निकालता है और फिर जोर से हंसता है।)

सरला : क्या बात है?

सुरेन्द्र : तुम्हारा पैन भी तो तुम्हारे स्वेटर में लगा है।

सरला : ओह, राधा जल्दी से चाय ले आ।

[दोनों अन्दर चले जाते हैं। राधा चाय की केतली मेज पर रखती है। इतने में सुरेन्द्र प्रवेश करता है और अखबार उठाकर खाने की मेज़ पर बैठकर पढ़ने लगता है। थोड़ी देर बाद सरला भी आ जाती है।]

सुरेन्द्र : अखबार में यह मिस इन्डिया के सलैक्शन की फोटो छपी है। पता नहीं लोग ऐसी प्रति-योगिताओं में अपनी लड़कियों को कैसे भेज देते हैं?

सरला : इसमें क्या बुराई है?

सुरेन्द्र : बुराई? यह तो बेशर्मी है।

सरला : यह तो आपका विचार है न?

सुरेन्द्र : यह सुन्दरता की होड़, यह खूबसूरती की नुमाइश, हमारे संस्कारों के विरुद्ध है। यह पश्चिम की देन हैं।

सरला : तुम्हारा यह सूट, यह टाई, छुरी कांटे यह भी तो सब पश्चिम की देन है।

सुरेन्द्र : नकल के लिए भी अकल चाहिए।

सरला : और अकल का ठेका सिर्फ आदमियों ने ले रखा है। मैं कहती हूं आप औरत को क्या समझते हैं?

सुरेन्द्र : औरत तो बस औरत है।

सरला : औरत, औरत है, लेकिन अब वह दीन हीन अबला नहीं है जिसे आदमी जब चाहे हंसा दे और जब चाहे रुला दे। वो आदमी की गुलाम नहीं, मोहताज नहीं। वो आदमी से किसी बात में कम नहीं, कमजोर नहीं। आज वह हवाई जहाज उड़ाती है, बन्दूक चलाती है, दरिया पर पुल बनाती है।

सुरेन्द्र : लेकिन वह खाना नहीं बनाती, बच्चों और पति की देखभाल नहीं करती।

सरला : यह भी कोई काम में काम है?

सुरेन्द्र : यह तो औरत का पहला कर्तव्य है।

सरला : बड़े आए कर्त्तव्य वाले। पहले यह देखो कि क्या तुम अपना कर्त्तव्य निभाते हो।

सुरेन्द्र : मैं क्या नहीं करता ?

सरला : तुम करते ही क्या हो ?

सुरेन्द्र : (चाय का प्याला पीते हुए) ओह यह तो चाय में नमक पड़ गया ।

सरला : (आमलेट खाते हुए) आमलेट में चीनी पड़ गई ।

सुरेन्द्र : मुझे यह रोज-रोज की झिक-झिक पसन्द नहीं ।

सरला : और मुझे तो जैसे लड़ने का शौक है ।

[अनिल का प्रवेश । अनिल अन्दर आता है लेकिन दोनों को लड़ते हुए देखकर वापस जाने लगता है कि सुरेन्द्र देख लेता है ।]

सुरेन्द्र : अनिल ।

अनिल : नमस्ते भाभी जी ।

सरला : नमस्ते ।

अनिल : आप लोगों का तो ड्यूट चल रहा है, इसलिए मैंने सोचा क्यों डिस्टर्ब करूं, कहीं आप लोग बेसुर और बेताल न हो जाएं ।

सुरेन्द्र : तुम आज इधर कैसे दफ्तर नहीं जा रहे हो क्या ?

अनिल : इधर किसी के पास आया था । मैंने सोचा तुम्हें दफ्तर साथ लेता चलूं ।

[सरला तेज़ी से बाहर जाने लगती है ।]

राधा : बीबी जी आपकी किताब ।

[सरला किताब लेने वापस आती है । सुरेन्द्र और अनिल बाहर चले जाते हैं । उनके बाद सरला किताब लेकर बाहर जाने लगती है ।]

राधा : बाबू जी नाश्ता ।

सुरेन्द्र : नाश्ता अब तू कर लेना ।

राधा : बीबी जी ।

सरला : (क्रोध से) क्या है ?

राधा : बीवी जी नाश्ता।

सरला : अब यह तू खा लेना।

[सरला चली जाती है। राधा मेज ठीक करती है, इतने में फूलचन्द आ जाता है। उसके हाथ में एक सेव है]

फूलचन्द : राधा।

राधा : आ जा ! वो लोग तो गए।

फूलचन्द : वो मैंने जाते देख लिए थे।

राधा : यह सेव कहां से लाया ?

फूलचन्द : हमारे साहब कश्मीर गए थे। वहां से सेब लाए हैं। उन्होंने ही दिया है।

राधा : तो खा लेता।

फूलचन्द : तेरे बिना कैसे खा लेता ?

राधा : कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए आ जा इधर ही आ जा।

[राधा और फूलचन्द कुर्सियों पर बैठ जाते हैं।]

राधा : आज न बाबू जी ने नाश्ता किया न बीवी जी ने।

फूलचन्द : क्यों ?

राधा : दोनों में लड़ाई हो गई। बस दोनों नाश्ता छोड़ कर चले गए।

फूलचन्द : क्या बात हो गई ?

राधा : अजीब लोग हैं। बिना बात के हर वक्त लड़ते हैं।

फूलचन्द : मूरख हैं। कितनी देर हुई इनकी शादी को ?

राधा : पन्द्रह बरस हो गए होंगे। यह ले गरम-गरम चाय पी ले।

फूलचन्द : तेरे हाथ की तो ठंडी चाय भी गरम लगती है।

राधा : वाह रे गुड ।

फूलचन्द : गुड़ कहां है ?

राधा : मैं अंग्रेजी गुड़ की बात कर रही हूं। अंग्रेजी में वाह रे गुड का मतलब होता है, बहुत अच्छा ।

फूलचन्द : तू अंग्रेजी में बात करती है ! (राधा के मुंह में सेब की फांक देते हुए) अंग्रेजी में मैं तो तेरा सरवेन्ट हूं।

राधा : फूलचन्द के मुँह में बिस्कुट देते हुए मैं तेरी सरवेन्टी । तू बैठ मैं तेरे लिए हलवा बनाकर लाती हूं ।

[थोड़ी देर के लिए रंगमंच पर अन्धेरा छा जाता है। जब रंगमंच पर प्रकाश होता है। फूलचन्द सोफे पर लेटा हुआ है पास ही मेज पर उसकी बीड़ी का बंडल और दियासलाई रखी है। राधा एक प्लेट में हलवा लेकर आती है ।]

राधा : देख रे, तेरे लिए असली घी का हलवा बना के लाई हूं । असली घी तो थोड़ा-सा ही था । सारा लगा दिया । असली घी के डिब्बे में डालडा डाल दिया ।

[इतने में पिंकी आ जाती है । राधा दौड़कर पिंकी के पास जाती है और उसे सोफे के पास आने से रोकती है । पिंकी इधर-उधर घूमती है राधा उसके साथ-साथ इस तरह चलती है कि वो सोये हुए फूलचन्द को न देख सके पर वह देख लेती है ।]

राधा : पिंकी बिटिया चल दूध पी ले ।

पिंकी : यहीं ले आ ।

राधा : यहां नहीं । यहां तक लाते-लाते तो ठंडा हो जाएगा ।

पिंकी : नहीं, ठंडा नहीं होगा । अच्छा मुझे एक संतरा

ला दे।

राधा : चलो बिटिया तुम ही छांटकर ले लो।

पिंकी : यहां ले आ।

राधा : तू तो अच्छी बिटिया है।

[राधा पिंकी को लेकर अन्दर चली जाती है और थोड़ी देर के बाद फिर आती है और फूलचन्द को ज़ोर से जगाती है।]

राधा : अरे उठ जल्दी कर, पिंकी आ गई है। ऐसे सो रहा है जैसे तेरे ससुर का घर हो। जल्दी उठा।

[फूलचन्द घबरा कर उठता है।]

राधा : जल्दी से हलवा खा ले।

[फूलचन्द हलवा खाता है इतने में पिंकी आ जाती है। फूलचन्द के मुंह में हलवा है वो एकदम मुंह बन्द कर लेता है।]

पिंकी : तुम कब आए ?

राधा : यह तो अभी आया है।

[फूलचन्द उठकर एक तरफ को हो जाता है।]

पिंकी : तुम जा रहे हो।

राधा : अभी नहीं जा रहा है।

पिंकी : तुम बोलते क्यों नहीं ?

[फूलचन्द जोर से छींकता है। पिंकी एकदम सोफे पर उछलती है।]

पिंकी : मुझे फूल ला दो न।

फूलचन्द : अभी लो बिटिया।

पिंकी : यह हलवा तुमने बनाया था ?

राधा : नहीं, यह हलवा तो इनकी कोठी में बना था। इनकी मेम साहब ने दिया था। यह मेरे लिए ले आया।

पिंकी : (प्लेट की तरफ देखकर) यह प्लेट तो हमारी

है।

फूलचन्द : बात यह है बिटिया……

राधा : वो दोना तो बाहर फेंक दिया न जिसमें हलवा लाया था।

फूलचन्द : हां वो तो वाहर फेंक दिया।

राधा : मैंने यह हलवा अपनी प्लेट में रखवा लिया। तुम खाओगी बिटिया ?

पिंकी : नहीं तुम खा लो। मुझे कहानी सुनाओ।

फूलचन्द : अच्छा बैठो, कहानी सुनाता हूं। एक था राजा, एक थी रानी। इनके एक राजकुमारी थी। बहुत सुन्दर थी। तुम्हारी तरह। उसे वो लोग बहुत प्यार करते थे।

पिंकी : किसको प्यार करते थे ?

फूलचन्द : राजा रानी राजकुमारी को बहुत प्यार करते थे।

पिंकी : राजा रानी, डैडी ममी की तरह लड़ते तो नहीं थे।

[फूलचन्द और राधा हंसते हैं।]

पिंकी : अच्छा मुझे पहले फूल ला दो।

फूलचन्द : अभी ला देता हूं।

पिंकी : तुम भी कभी लड़ते हो ?

फूलचन्द : नहीं।

पिंकी : डैडी ममी क्यों लड़ते हैं ?

फूलचन्द : वो लोग पढ़े-लिखे जो हैं। हम लोग अनपढ़ हैं। अच्छा बिटिया मैं तुम्हारे लिए फल लाता हूं।

[फूलचन्द चला जाता है।]

पिंकी : राधा, मेरा स्वेटर ला दो, यह कोट रख आओ।

राधा : कौन-सा स्वेटर ?

पिंकी : अगर पापा कहते हैं लाल स्वेटर पहनो तो ममी कहती है हरा पहनो और अगर पापा कहते हैं हरा पहनो तो ममी कहती है लाल पहनो। राधा तू मेरा नीला स्वेटर ले आ।

[राधा अन्दर जाती है। सरला का बाहर से प्रवेश।]

सरला : पिंकी।

पिंकी : ममी (सरला पिंकी के पास आती है और प्यार करती है।)

सरला : तू ने दूध पी लिया?

पिंकी : हाँ ममी।

सरला : यह ले तेरे लिए चाकलेट लाई हूं।

पिंकी : ममी, माली राधा के लिए हलवा लाया था।

सरला : हूं।

[राधा स्वेटर लेकर आ जाती है। सरला उसे स्वेटर पहनाती है।]

पिंकी : ममी में खेलने जा रही हूं।

सरला : जल्दी आ जाना। तेरे पापा आ जाएं तो बाजार चलेंगे। आज बाहर ही खाना खाएंगे।

पिंकी : मैं आइसक्रीम खाऊंगी।

[पिंकी बाहर चली जाती है।]

सरला : खा लेना। (हलवे की प्लेट की ओर देखते हुए) इसे ले जा। यह हलवा कहां से लाया था।

राधा : दोपहर को वो कीर्तन पर गया था। वहां उसे प्रसाद मिला था सो मेरे लिए ले आया। वो मेरे बिना कोई चीज नहीं खाता।

सरला : यह सब चापलूसी है। तू इन आदमियों को नहीं जानती। यह सब······

राधा : बीबी जी, एक बात कहूं। हमारे शास्त्रों में तो

लिखा है कि पति परमेश्वर होता है।

सरला : (हंसकर) तू ने शास्त्र पढ़े हैं।

राधा : नहीं बीबी जी, आपने तो पढ़े होंगे।

सरला : यह शास्त्र भी तो आदमियों के ही लिखे हुए हैं। उसमें आदमियों ने अपने मतलब की ही बातें लिखी हैं। यह शास्त्र सब आउट ऑफ डेट हो चुके हैं। आजकल औरतों और मर्दों के अधिकार बराबर हैं।

राधा : मेरी समझ से तो यह बातें बाहर की हैं। मैं तो इतना जानूं औरत औरत है और मरद मरद। किसी बखत मरद खरी खोटी कहे भी तो औरत को चुप रहना चाहिए।

सरला : तू तो बेवकूफ है।

[सरला उठकर अन्दर चली जाती है। राधा मेज ठीक करने लगती है। इतने में फूलचन्द कुछ फूल लेकर आता है।]

फूलचन्द : पिंकी बिटिया के वास्ते फूल लाया हूं। ले उसे दे देना और हां गांव से चिट्ठी आई है।

राधा : क्या लिखा है?

फूलचन्द : लिखा है कि कालू की भूरी भैंस का बछड़ा मर गया, बाकी सब खैरियत है। तोताराम मुकदमा हार गया बाकी सब खैरियत है। मनसाराम की चाची पिछले शुक्रवार को गुजर गई बाकी सब खैरियत है। बाकी सबको राम-राम लिखी है।

राधा : राम-राम?

फूलचन्द : और लिखा है कि गंगाराम और जमनादास सोनीपत जा रहे हैं। मंगल की रात को वो दिल्ली तुम्हारे पास रुकेंगे। बाकी सब खैरियत है।

राधा : मंगल तो आज ही है।

फूलचन्द : शाम की गाड़ी से आवेंगे। मैं तो यूं कहने आया था कि बीबी जी से अभी तू छुट्टी ले ले। चल के उनकी रोटी का बन्दोबस्त कर।

राधा : मैं अभी बीबी जी से कहती हूं।

फूलचन्द : उनकी अच्छी खातिर करनी चाहिए।

राधा : यो तो अपनी इज्जत का सवाल है। और खातिर में कमी रह गई तो सारे गांव में वताते फिरेंगे। अच्छा तू चल मैं अभी आई।

[सरला का प्रवेश]

सरला : राधा, देखना पिंकी किधर है ?

फूलचन्द : नमस्ते बीबी जी।

सरला : नमस्ते कहो ठीक हो।

फूलचन्द : आपकी कृपा है मालिक। भगवान् आपको सलामत रखे।

राधा : आज हमारे गांव से मेहमान आ रहे हैं।

फूलचन्द : गंगाराम और जमनादास।

राधा : सोनीपंत जा रहे हैं।

फूलचन्द : आज रात को हमारे धोरे ठहरेंगे।

राधा : उनकी रात की रोटी तैयार करनी है बीबी जी।

फूलचन्द : उनकी तो खूब खातिर करनी पड़ेगी।

राधा : यो तो अपनी इज्जत का सवाल है।

फूलचन्द : अगर किसी बात में कमी रह गई तो सारे गांव में बदनाम करेंगे।

सरला : तुम्हारे रिश्तेदार हैं ?

फूलचन्द : नहीं बीबी जी, पर हमारे यहां तो सारा गाँव ही अपनी विरादरी होवे। आज शाम की छुट्टी दे दो बीबी जी, कल दोपहर को काम पर आ जाएगी।

सरला : तुमने सुबह नहीं बताया।
फूलचन्द : अभी तो चिट्ठी आई है।
राधा : हां बीबी जी, शाम की डाक से।
सरला : अच्छा जाओ, आज तो हम लोग भी बाजार जा रहे हैं। खाना नहीं बनेगा।
राधा और फूलचन्द : राम-राम बीबी जी।
सरला : राम-राम। बाहर से पिंकी को भेजते जाना।

[सरला स्कूल की कापियां देखने लगती है, इतने में पिंकी आ जाती है।]

पिंकी : ममी, ममी पापा आ रहे हैं।
पिंकी : आज तो बाजार चलेंगे न? मैं आइसक्रीम खाऊंगी।
सरला : कह तो दिया, खा लेना।
पिंकी : एक बात कहूं ममी, डैडी से लड़ना नहीं। लड़ाई हो गई तो सारा प्रोग्राम फिस हो जाएगा।
सरला : (एक हल्का-सा थप्पड़ मार देती है) मैं कहां लड़ती हूं। लड़ने की आदत तो तेरे डैडी की है।

[सुरेन्द्र का प्रवेश]

पिंकी : (सुरेन्द्र के पास जाकर) डैडी, डैडी।
सुरेन्द्र : (टॉफी देते हुए) यह लो बेटे, तुम्हारे लिए टॉफी लाया हूं।
पिंकी : ममी तो मेरे लिए एक रुपये वाला चौकलेट लाई है।
सुरेन्द्र : तुम्हारी ममी मुझसे ज्यादा अमीर है। उनकी तनखा मुझ से ५० रुपया ज्यादा है।
सरला : यह भी मेरा कसूर है। पिंकी डैडी से पूछ चाय पिएंगे।
पिंकी : ममी पूछती है, आप चाय पिएंगे।

सुरेन्द्र : हां, पियूंगा।

पिंकी : डैडी कहते हैं पियूंगा।

सरला : इनसे कह दे, दो प्याले चाय बना लें, एक प्याला मैं भी पियूंगी।

सुरेन्द्र : राधा कहां गई ?

सरला : कह दे, मैंने उसे आज छुट्टी दे दी।

पिंकी : मम्मी कहती है उसे छुट्टी दे दी।

सुरेन्द्र : अब काम कैसे चलेगा ?

सरला : मैंने उसे आज शाम को छुट्टी दी है।

सुरेन्द्र : पर क्यों ?

सरला : मेरी मरजी। तुम्हारा मतलब है कि उसे छुट्टी देने के लिए मैं अर्जी लिखवाया करूं और उसे तुम्हारे पास भेजा करूं। मुझे उसे छुट्टी देने का कोई अधिकार नहीं।

सुरेन्द्र : तुम तो हर बात उल्टी समझती हो।

सरला : जी हां, मेरा दिमाग खराब है। उसके गांव के कुछ आदमी आए हैं। इसलिए उसने छुट्टी मांगी थी। वैसे भी आज तो बाहर खाने का प्रोग्राम है।

सुरेन्द्र : आज बाजार नहीं जाएंगे।

पिंकी : पापा चलो न।

सुरेन्द्र : तू जा बाहर खेल।

पिंकी : आप लोगों ने फिर लड़ाई शुरू कर दी।

सुरेन्द्र : जा बाहर खेल।

[पिंकी सहमी सी बाहर चली जाती है।]

सरला : जब सुबह बाहर जाने का प्रोग्राम बनाया था तो अब क्या हो गया ?

सुरेन्द्र : प्रोग्राम पक्का कहां हुआ था।

सरला कह तो दिया था, कि फ्रिज देखने चलेंगे और रमेश के यहां हो आएंगे। और क्या स्टेम्प पेपर

पर लिख कर देती।

सुरेन्द्र : उसके बाद तो तुम लड़ पड़ी थीं।

सरला : क्यों झूठ बोलते हो। लड़ाई तो तुमने शुरू की थी।

सुरेन्द्र : बात यह है कि मैं अनिल को शाम को खाने के लिए कह आया हूं। रमेश के यहां कल चले चलेंगे।

सरला : पिछले दो महीनों से उसके यहां जानें को कह रही हूं लेकिन तुम्हें दोस्तों से फुरसत ही नहीं मिलती। जब तुम्हें मालूम था कि आज रमेश के यहां जाना है तो फिर तुमनें उसे क्यों इनवाइट किया। तुम जानबूझ कर मुझे दुःख देते हो।

सुरेन्द्र : बात यह है उसकी बीबी आज कल यहां नहीं है। उसने कहा भई, आज शाम को तुम्हारे यहां खाना खाएंगे। मैंने कहा अच्छा और कह ही क्या सकता था।

[अनिल का प्रवेश। वह चुपचाप इनकी बातें सुनता है और एक दम बाहर चला जाता है।]

सरला : यह तो अब तुम बात बना रहे हो। मैं कहे देती हूं कि मुझ से खाना नहीं बनेगा।

सुरेन्द्र : अब तो मै उसे कह चुका हूं।

सरला : मैंने भी रमेश को टेलीफोन कर दिया था कि शाम को उसके यहां आएंगे।

सुरेन्द्र : अब तो मेरी इज्जत का सवाल है।

सरला : और मेरी भी इज्जत का सवाल है।

[अनिल दरवाजा खटखटाता है।]

सुरेन्द्र : कौन ?

अनिल ; भई मैं हूं।

सुरेन्द्र : आ-आ भई।

अनिल : (सोचकर) कहो, ड्यूट हो रहा है। नमस्ते भाभी।

सरला : नमस्ते, बैठिये !

अनिल : बैठने का वक्त नहीं है, मैं जरा जल्दी में हूं।

सुरेन्द्र : जल्दी, जल्दी किस बात की। डिनर तो आठ बजे ही मिलेगा।

अनिल : भई मैं तो माफी मांगने आया हूं।

सुरेन्द्र : किस बात की ?

अनिल : मेरठ से मेरे मामा का लड़का आ गया है, उसके साथ कहीं जाना है, माफ करना।

सुरेन्द्र : भई यह माफ वाफ नहीं होगा।

अनिल : मैं तो भाभी जी से माफी मांग रहा हूं, तुमसे नहीं। भाभीजी आपने मेरे लिए कोई तकल्लुफ तो नहीं किया, आपको जो कष्ट हुआ है उसके लिए माफी चाहता हूं।

सुरेन्द्र : इन्होंने तो चार-पांच सब्जी बना ली हैं।

सरला : तो क्या आप सचमुच खाना नहीं खाएंगे।

अनिल : नहीं भाभी।

सरला : अपने मामा के लड़के को भी यहीं ले आते।

अनिल : हम लोगों को किसी काम से जाना है। फिर यह तो अपना घर है फिर कभी सही। आप तो वैसे भी मेरी बहुत खातिर करती हैं।

सरला : अच्छा जैसी आपकी मर्जी।

अनिल : नमस्ते। (अनिल चला जाता है।)

सुरेन्द्र : लो अब तो खुश हो गईं।

सरला : इसमें खुश होने की क्या बात है।

सुरेन्द्र : जो तुम चाहती थीं वही हो गया।

सरला : मैं क्या चाहती थी ?

सुरेन्द्र : यही कि वह यहां खाना न खाए।

सरला : तुम हमेशा मुझे गलत समझते हो। जब भी

मैं कभी अपने किसी रिश्तेदार को मिलने के लिए कहती हूं तुम पर मुसीबत आ जाती है।

सुरेन्द्र : मैंने तुम्हें कब मिलने से रोका है ?

सरला : तुम रोक भी कैसे सकते हो ? तुम रात-दिन अपने दोस्तों के साथ गुलछर्रे उड़ाओ और मैं अपने रिश्तेदारों को भी नहीं मिल सकती।

सुरेन्द्र : मिलो, और गले मिलो।

सरला : यह मेरे रिश्तेदार ही हैं जो वक्त पर काम आएंगे। तुम्हारे दोस्त तो सब फसली बटेर हैं।

सुरेन्द्र : मेरे दोस्त बड़े समझदार हैं। मालूम होता है अनिल ने हम लोगों की बातें सुन ली थीं। और उसने जान बूझ कर यह बहाना बनाया।

सरला : सो व्हाट ? सुन ली थी तो सुन ले। मुझे किसी का डर नहीं, किसी की परवा नहीं।

सुरेन्द्र : तुमने मुझे कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रखा।

सरला : तो मुँह ढक के फिरा करो।

सुरेन्द्र : अच्छा बाबा, अब बस करो, चुप रहो।

सरला : तुम चुप रहो।

सुरेन्द्र : ओह कीप क्वाइट।

सरला : यू कीप क्वाइट।

सुरेन्द्र : आई डू नौट वांट टू टाक टू यू।

सरला : आई हेट यू।

सुरेन्द्र : शटअप (सोफे की गद्दी उठाकर मारता है।)

सरला : यू शटअप (वो भी कुर्सी पर रखी हुई गद्दी उठाकर मारती है।)

[परदा गिरता है]

दूसरा अंक

[राधा कमरे में मेज़पोश बदल रही है।]

फूलचन्द : अगर तू ठीक से काम नहीं करेगी तो हम तुझे घर से निकाल देंगे।

राधा : अच्छा, तो तू है।

फूलचन्द : हम तुझे भी बाहर निकाल देंगे और खुद भी निकल जायेंगे।

राधा : क्या मतलब ?

फूलचन्द : मतलब यह कि हम घर बदल रहे हैं। हमें एक चपरासी का क्वाटर मिल रहा है।

राधा : मैं तो डर ही गई थी। मैं समझी कि बाबू जी आ गये।

फूलचन्द : हमें नहीं बाबू जी और बीबी जी बनना। राधा कल मैंने रास्ते में एक बाइसकोप देखा। उसमें एक आदमी कह रहा था कि मन्त्री हो या सन्तरी, मास्टर हो या डाक्टर, थानेदार हो या ठेकेदार सबका अपनी-अपनी जोरू से कभी न कभी तो झगड़ा होवे ही है और राधा वे यह भी कह रहा था कि अगर मरद और औरत में झगड़ा नहीं होवे तो वे औरत मर्द नहीं, भाई बहन होवे हैं।

राधा : हाय राम, अपना तो कभी झगड़ा हुआ ही नहीं।

फूलचन्द : हां, राधा, हम भी एक दफे झगड़ेंगे जरूर।

राधा : अच्छा तो झगड़ा तू शुरू कर।

फूलचद : नहीं, झगड़ा तू शुरू कर।
राधा : मैं कोई लड़ाकी हूं।
फूलचन्द : और नहीं तो मैं लड़ाकू हूं।
[मामा बाहर से आवाज देता है।]
मामा : राधा, राधा।
राधा : बाबू जी के मामा जी आ गये।
[मामा का प्रवेश]
फूलचन्द : राम राम बाबू जी।
मामा : राम राम।
[फूलचन्द बाहर चला जाता है।]
मामा : तुम्हारे बाबू जी, बीबी जी अभी नहीं आए।
राधा : अभी तो नहीं आये। पिंकी आती होगी।
मामा : यह लोग कितने बजे आते हैं ?
राधा : बस जब उनका जी चाहता है आ जाते हैं। न बीबी जी बाबू जी को बताती हैं कि कब आयेंगी और न बाबू जी बीबी जी को।
मामा : एक बात बता राधा।
राधा : हां कहो।
मामा : मुझे आए चार दिन हुए और मैं देखता हूं कि इनकी रोज लड़ाई होती है यह मेरे आने से झगड़ा शुरू हो गया कि पहले भी इनका यही हाल था ?
राधा : कुछ न पूछो। इनका तो रोज झगड़ा होवे।
मामा : किस बात पर झगड़ा होता है।
राधा : यूं कहो कि किस बात पर नहीं होवे। बस यों समझो हिन्दी में लड़ते-लड़ते थक जावे तो अंग्रेजी में लड़ते हैं और अंग्रेजी में लड़ते-लड़ते थक जावे तो हिन्दी में चालू हो जावें।
मामा : बात क्या है ?
राधा : मेरी समझ में तो कुछ न आवे। हां एक बात

है बाबू जी बीबी जी को कहे तू शटाप और वीबी जी बाबू जी को कहे तू शटाप। इनका अगर यों फैसला हो जावे कि कौन शटाप है तो झगड़ा मिट जावे। यो शटाप क्या होवे ?

मामा : मैं कौन सा अंग्रेजी पढ़ा हूं।

राधा : यो तो बहुत अच्छा है। यो अंग्रेजी ही लड़ाई की जड़ है। सुना है इसके खातिर तो बड़ा ही खून खराबा हुआ है।

मामा : एक गिलास पानी तो पिला।

राधा : अभी लाई।

[राधा शीशे के गिलास में पानी लेकर आती है।]

मामा : मुझे तो तू पीतल के गिलास में पानी दिया कर।

राधा : पीतल का गिलास तो घर में है ही नहीं।

मामा : भई वाह ! तूने बीबी जी से पूछा था।

राधा : मैंने बीबी जी से परसों ही कह दिया था कि आपके खातिर पीतल का गिलास मंगवा लें।

मामा : तो क्या कहा ?

राधा : पहले तो चुप हो गई और फिर बोली 'जा तू अपना काम कर'। बीवी जी के दहेज के तो पीतल के बर्तन हैं पर वो बीबी जी निकालती नहीं। कहो तो आज मैं बाबू जी से कह दूं।

मामा : नहीं। अब तू कुछ न कहना। मैं नहीं चाहता कि उनका इस बात पर भी झगड़ा हो।

राधा : झगड़ा तो उनका होवेगा ही। इसी बात में नहीं तो किसी और बात पर होवेगा।

[पिंकी स्कूल से आती है।]

मामा : आ गई बिटिया।

पिंकी : हां, बाबा।

राधा : मैं तेरे लिए दूध लाती हूं।

मामा : हां। यहीं ले आ। पिंकी बिटिया हमारे पास बैठकर दूध पीवेगी।

राधा : आज तो टोंड का दूध मिला है।

मामा : राम-राम ! यहां गाय-भैंस का दूध नहीं मिलता। यह टोंड कौन-सा जानवर है।

राधा : टोंड का मतलब है कि इसमें से क्रीम निकाल ली है।

[राधा अन्दर चली जाती है।]

मामा : बिटिया तू हमारे गांव आ तो तुझे असली घी, दूध मक्खन खिलायेंगे।

पिंकी : आपके पास कितनी बोतलों का टोकन है ?

मामा : हमारे पास तो भैंस है भैंस। जो रोज पूरा दस सेर दूध देती है। अब की छुट्टियों में तू हमारे पास गांव में आ जइयो।

पिंकी : गांव में और क्या होता है ?

मामा : गर्मी की छुट्टियों में तो तुझे आम के बाग में ले चलूंगा।

पिंकी : वहां तो खूब कच्ची आमियां मिलती होंगी ?

मामा : हां, कच्ची भी और पक्की भी। बस पेड़ से तोड़-तोड़कर खाइयो।

पिंकी : (प्रसन्न होकर) तब तो मैं जरूर आऊंगी।

मामा : हम तुझे ककड़ी, खरबूजे के खेत में भी ले चलेंगे।

पिंकी : बाग में झूला भी होगा।

मामा : हां बिटिया झूला भी डलवा देंगे। और तुझे चूरमा भी खिलाएंगे।

पिंकी : वो क्या होता है बाबा ?

मामा : घी में रोटी को चूर के और उसमें चीनी मिला देते हैं।

पिंकी : मैं तो आज ही पापा से कहूंगी कि मैं तो छुट्टियों

में गांव जाऊंगी।

मामा : पर बिटिया हमारे घर में सोफा नहीं है, कालीन नहीं है, जो कूदने से खराब हो जावे।

पिंकी : हां बाबा। ममी सुबह कह रही थी कि आपको सोफे पर बैठना भी नहीं आता। सोफे पर चौकड़ी मारकर बैठ जाते हैं।

मामा : ओह इन नरम गद्दों पर उठने-बैठने के कानून तो बड़े सख्त हैं। यहां आदमियों से अधिक इन लोहे और लकड़ी की चीजों की कदर है।

पिंकी : आपके यहां मेज-कुर्सी भी नहीं है।

मामा : हमारे यहाँ मूढ़े हैं, चटाई है।

पिंकी : आपके यहां पर्दे भी नहीं है ?

मामा : नहीं बिटिया नहीं, यह पर्दा डालने की जरूरत तो शहर वालों को ही होती है। वो नहीं चाहते कि बाहर से दिखाई दे कि उनके अन्दर क्या है ? हम लोग तो जैसे बाहर से वैसे अन्दर से। हमारे कपड़े मैले हैं पर मन में मैल नहीं होता।

पिंकी : राधा, राधा, तौलिया लाना।

मामा : हमारे पास वाले गांव में एक—मेला लगता है वो भी तुझे दिखायेंगे।

पिंकी : मेले में क्या होता है ?

मामा : तुझे हाथी पर बिठा देंगे।

पिंकी : सच !

[राधा तौलिया लेकर आती है।]

पिंकी : यह तौलिया तो मामा जी का है।

मामा : नहीं, मैं तो तौलिया नहीं लाया था।

पिंकी : ममी ने यह तौलिया राधा को दिया था और कहा था कि यह तौलिया आपके लिए है और कोई न ले और जब आप चले जाएंगें तो यह

तौलिया राधा को दे देंगे। तू इसे रहने दे। मैं रूमाल रख लेती हूं।

[पिंकी कपड़ों पर रूमाल रखकर दूध पी लेती है। राधा गिलास लेकर चली जाती है, इतने में अनिल आता है।]

पिंकी : नमस्ते अंकल।

अनिल : नमस्ते। (मामा जी को) नमस्ते।

मामा : जीते रहो बेटा।

अनिल : अभी तुम्हारे डैडी नहीं आए ?

पिंकी : नहीं।

अनिल : और तुम्हारी ममी ?

पिंकी : वो भी नहीं आए। मेरी एक फ्रैंड की आज बर्थ डे पार्टी है। ममी आएंगी तो मैं वहां जाऊंगी।

मामा : सुरेन्द्र तुम्हारे साथ काम करता है।

अनिल : जी हां। हम लोग पिछले दस साल से एक ही दफ्तर में हैं।

पिंकी : यह। हमारे डैडी के मामा जी हैं।

अनिल : मुझे मालूम है। आपने दिल्ली देख ली।

मामा : हां हमने दिल्ली भी देख ली और दिल्ली वाले भी।

अनिल : आप पहले भी यहां आए थे ?

मामा : बारह साल हुए तब आया था।

अनिल : दिल्ली बहुत बदल गई है। अब तो यहां पर बड़ी ऊंची-ऊची इमारतें बन गई हैं।

मामा : मगर इन ऊची-ऊची इमारतों में रहने वालों के दिल बहुत छोटे हैं।

पिंकी : रंग-बिरंगी रोशनी देखी है ?

मामा : यहां बहुत कम लोग अपने असली रूप में नजर आते हैं।

अनिल : यहां शोरगुल बहुत है।
मामा : सब एक दूसरे की आवाज दबाने की कोशिश करते हैं।
पिंकी : बाबा, आपने चिड़िया घर भी देखा है ?
मामा : यहां चिड़िया घर की क्या जरूरत है। यहां के आदमी ही बगुले की तरह भक्ति करते हैं, गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं, और सांप की तरह डंक मारते हैं। यहां तो हर घर चिड़िया घर है।
अनिल : यह तो आप ठीक कहते हैं। देहातों में अब भी सादगी है, सच्चाई है और शांति है।
मामा : यहां पर पानी मोल बिकता है, हमारे यहां छाछ मुफ्त बंटती है। हमारे यहां लोग बांट कर खाते और यहां खाने के लिए बटोरते हैं। यहां धन की पूजा होती है और हमारे यहां धरती की। यहां के लोगों में माया की तरह छल, कपट है और हमारे लोग धरती की तरह सहनशील और उदार हैं।
अनिल : मगर अब तो गांव में भी वो बात नहीं रही।
मामा : फिर भी गांव में वो शहर वाली बात नहीं।
पिंकी : मैं बाहर खेलने जा रही हूं।
मामा : अच्छा जाओ।
अनिल : अभी तो आप कुछ दिन यहां ठहरेंगे।
मामा : नहीं भई मैं तो आज ही जा रहा हूं।
अनिल : सुरेन्द्र तो कह रहा था कि आप दस-पन्द्रह दिन ठहरेंगे।
मामा : नहीं, भई अब जी उचाट हो गया है।
अनिल : कोई खास बात हुई है ?
मामा : वैसे तो मुझे हर तरह का आराम है। सुरेन्द्र और बहू मेरा बड़ा ख्याल रखते हैं।

अनिल : मुझ से कोई बात छिपी नहीं है मैं तो यह कहने आया था कि आप इन लोगों को समझाइए।

मामा : मेरी कौन सुनता है ? तुम तो इनके दोस्त हो। तुम से तो बहू भी खुलकर बात कर सकती है। तुम ही समझाओ।

अनिल : मैंने तो बहुत कोशिश की है।

मामा : मुझे तो यह देखकर बड़ा दुःख हुआ है। इस घर में किसी का मान नहीं किसी की इज्जत नहीं।

अनिल : और इन दोनों को इसका भी ख्याल नहीं कि बच्चे पर इसका क्या असर पड़ता है।

मामा : वैसे दोनों पढ़े लिखे हैं।

अनिल : मुश्किल तो यही है कि पढ़े-लिखे हैं। दोनों अपने अधिकारों की बात करते हैं, कर्त्तव्य की नहीं।

मामा : भगवान् इनका भला करे। मैं तो आज ही चला जाऊंगा।

अनिल : मैंने एक तरकीब सोची है।

मामा : क्या (अनिल मामा के कान में कुछ कहता है।)

मामा : भई तरकीब तो अच्छी है।

अनिल : अच्छा मैं भी चलता हूं। नमस्ते।

मामा : जीते रहो।

[अनिल चला जाता है। मामा अपनी चीज़ें इकट्ठी करने लगते हैं। राधा एक तस्तरी में कुछ खाने को लेकर आती है।]

राधा : मैं चाय लायी हूं।

मामा : मेरा तो खाने को मन नहीं कर रहा है।

राधा : थोड़ा वहुत खा लो।

[पिंकी और सरला का प्रवेश ।]

सरला : जबरदस्ती क्यों खिलाती है। मन नहीं करता तो मत खाइये।

मामा : तुम आ गईं बहू ?

सरला : आप बहुत सुबह उठकर पाठ करते हैं।

मामा : इस उम्र में भगवान् का भजन तो करना ही चाहिए।

सरला : वो तो ठीक है। लेकिन आज पड़ोसिन कह रही थी कि आप इतने ज़ोर से पाठ करते हैं कि उसकी आंख चार बजे खुल गई और उसके बाद वह सो नहीं सकी।

पिंकी : ममी, इस साल गर्मियों की छुट्टी में बाबा के पास गांव चलेंगे।

सरला : वहां तो गर्मियों में और भी झुलस जायेंगे।

पिंकी : गाँव में कच्ची आमियां खाएंगे।

सरला : कच्चे आम से गला खराब होता है।

पिंकी : मैं चूरमा खाऊंगी।

सरला : वो भी कोई खाने की चीज़ है।

पिंकी : अच्छा ममी आज बेबी का जन्म दिन है। वहां तो चलोगी न ?

सरला : नहीं, मुझे महिला समाज की मीटिंग अटेन्ड करनी है। मैं तो यहां कापियां रखने आई थी। राधा-राधा।

[राधा आती है।]

सरला : राधा तू पिंकी को बेबी के यहां छोड़ आ।

राधा : बहुत अच्छा।

[राधा और पिंकी जाने लगते हैं।]

पिंकी : ममी, हम वहां गाएंगे, हैप्पी बर्थ डे टू यू। (Happy Birth day to you)

मामा : हमारी बिटिया तो अंग्रेजी में भजन गाती है।

सरला : चल चौराहे तक मैं भी चलती हूं।

[सरला, पिंकी और राधा चले जाते हैं।]

[मामा अपना थैला और बिस्तर अन्दर से उठाकर लाते हैं। और बाहर जाने लगते हैं। इतने में सुरेन्द्र आता है।]

सुरेन्द्र : मामा जी चलिए आपको कनाट प्लेस की सैर करा लाऊं।

मामा : मैंने सब प्लेस देख ली हैं बेटा। मैं तो अब जा रहा हूं। बस तुझे देख रहा था।

सुरेन्द्र : परसों तो आप कह रहे थे कि अभी आप आठ-दस दिन रहेंगे।

मामा : मगर मैं अब यहां नहीं ठहरूंगा।

सुरेन्द्र : यह आप क्या कह रहे हैं? यह तो आपका घर है।

मामा : नहीं, बेटा नहीं। यह तो तुम्हारा घर भी नहीं है। घर वो होता है जहां आदमी को शांति मिले, घर वो होता है जहां आदमी की थकान दूर होती है, जहां आदमी की भूख-प्यास मिटती है, घर वो होता है जहां आदमी चैन से सो सके और सुख की सांस ले सके।

सुरेन्द्र : क्या सरला ने आप से कुछ कहा है?

मामा : नहीं।

सुरेन्द्र : तो फिर क्या बात है? हमारा झगड़ा तो होता ही रहता है। आप क्यों जाते हैं?

मामा : मगर मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से झगड़ा हो।

सुरेन्द्र : झगड़ा आपकी वजह से तो नहीं होता।

मामा : मैं भी सब सुनता हूं। सब देखता हूं। मैं अब यहां नहीं रह सकता। मुझे इस पलंग और सोफे की जरूरत नहीं। मुझे तो सिर्फ चारपाई

चाहिए। मैं तो दो-चार दिन धर्मशाला में भी काट सकता हूं, मन्दिर में भी रह सकता हूं।

सुरेन्द्र : यह कैसे हो सकता है। यह तो हमारा अपमान है।

मामा : अगर तुम लोग इस घर में एक-दूसरे के मान-अपमान का ख्याल करने लगो तो सुखी हो जाओ। तुम लोग तो पढ़े-लिखे हो। कुछ तुम सोचो कुछ उसे समझाओ।

सुरेन्द्र : मैं तो खुद बहुत तंग आ गया हूं।

मामा : पति-पत्नी का तो काया-छाया का सम्बन्ध है। एक किरन है तो दूसरा उजाला। एक साज़ है तो दूसरा आवाज़, एक लहर है तो दूसरा किनारा एक-दूसरे के बिना कोई अस्तित्व नहीं।

सुरेन्द्र : मामा जी बात यह है कि……

मामा : मैं आऊंगा और जरूर आऊंगा, जब यह तुम्हारा घर, घर हो जाएगा। जब इस घर के दो स्वर एक राग में ढल जाएंगे।

[मामा चला जाता है। सुरेन्द्र अधीर-सा इधर-उधर घूमता है। इतने में सरला आ जाती है।]

सुरेन्द्र : मामा जी तो चले गए।

सरला : तो मैं क्या करूं ?

सुरेन्द्र : वो हम लोगों से नाराज होकर गए हैं।

सरला : तुम से नाराज हुए होंगे। मैंने उन्हें कहा ही क्या था ?

सुरेन्द्र : तुमने कहने में कसर भी क्या छोड़ी थी ?

सरला : तम क्या उन्हें उम्र भर यहीं रखना चाहते हो।

सुरेन्द्र : उम्र भर की बात छोड़ो। तुमने तो उनका चार दिन ठहरना मुश्किल कर दिया।

सरला : फिर वही बात। आखिर मैंने उन्हें क्या कहा था? तुम तो खामखां मुझे बदनाम करते हो?

सुरेन्द्र : हमारे होते हुए वो धर्मशाला में ठहरें यह हमारी बेइज्जती है।

सरला : तुम्हारी होगी, मेरी नहीं।

सुरेन्द्र : मेरे मामा तुम्हारे कुछ नहीं लगते?

सरला : नहीं, नहीं, नहीं!

सुरेन्द्र : तो ठीक है। आज से तुम्हारा भी कोई रिश्तेदार लहां नहीं आएगा।

सरला : मेरे रिश्तेदार तो यहां बहुत कम आते हैं।

सुरेन्द्र : अभी पिछले महीने ही हरीश आया था।

सरला : ओह, तो उसके आने की जलन हो रही है। आइन्दा वो यहां नहीं ठहरेगा। उसके ठहरने के लिए पचास जगह हैं। वो तो अच्छे-से-अच्छे होटल में भी ठहर सकता है। यह तो तुम्हारे ही रिश्तेदार हैं जिन्हें धर्मशाला और मन्दिर में जगह ढूंड़नी पड़ेगी।

सुरेन्द्र : क्या मतलब?

सरला : जैसे तुम वैसे तुम्हारे रिश्तेदार। दूसरे के यहां रहने की तमीज़ भी होती है। तुम्हारे मामा ने चार दिन में उस कमरे का यह हाल कर दिया कि मालूम होता है कि यहां आदमी नहीं जानवर रहते हों।

सुरेन्द्र : सरला होश से बातें करो।

सरला : होश से ही बातें कर रही हूं।

सुरेन्द्र : कहाँ जा रही हो?

सरला : जहन्नुम में।

सुरेन्द्र : तो जाओ।

[सरला बाहर चली जाती है। थोड़ी देर बाद

फूलचन्द का प्रवेश। फूलचन्द सुरेन्द्र को नहीं देखता है और आते ही राधा को आवाज लगाता है।]

फूलचन्द : राधा।

सुरेन्द्र : राधा यहां नहीं है।

फूलचन्द : बीबी जी हैं।

सुरेन्द्र : नहीं।

फूलचन्द : कहां गई हैं ?

सुरेन्द्र : जहन्नुम में।

फूलचन्द : कब तक लौटेंगी ?

सुरेन्द्र : वहीं जाकर पूछ लो।

फूलचन्द : वहां हमें कौन जाने देता है। वहां तो आप जैसे पढ़े-लिखे आदमी ही जाते हैं। हमारे बाबू जी और बीबी जी भी रोज जीबजाना क्लब में जावे हैं।

सुरेन्द्र : तुझे सिवाय यहां चक्कर लगाने के और कोई काम नहीं है। न खुद काम करता है। न राधा को करने देता है। जा भाग यहां से। गैट आउट।

[फूलचन्द चला जाता है। थोड़ी देर के बाद अनिल साधु के भेष में आता है।]

अनिल : जो दे उसका भी भला जो न दे उसका भी भला। अलख निरंजन।

सुरेन्द्र : क्षमा करो बाबा।

अनिल : क्षमा तो भगवान से मांगो। वो बड़ा दयालु है। वो ही तुम्हारे पापों को क्षमा कर सकता है।

सुरेन्द्र : बाबा, इस समय चले जाइए।

अनिल : समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। यह तो तुमने न जाने कौन से अच्छे कर्म किए थे जो बाबा मोचनानन्द तुम्हारे द्वारे चले आए।

सुरेन्द्र : आप क्या चाहते हैं ?
अनिल : बाबा को कुछ नहीं चाहिए, थोड़ा शीतल जल होगा ?
सुरेन्द्र : अच्छा अभी लीजिए ।
अनिल : भगवान आपका भला करे ।
सुरेन्द्र : (पानी का गिलास देते हुए) यह लीजिए महाराज ।
अनिल : (दो घूंट पीकर) अच्छा अब हम चलते हैं। पर बाबा की एक बात याद रखना ।
सुरेन्द्र : वो क्या ?
अनिल : क्रोध विनाश की जड़ है । क्रोध में मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है ।
सुरेन्द्र : क्या मतलब ?
अनिल : क्रोध मत किया करो, तुम्हारा मन अशान्त रहता है न ।
सुरेन्द्र : जी नहीं ।
अनिल : बाबा से झूठ मत बोलो । तुम्हारी पीठ पर तिल है न ।
सुरेन्द्र : जी हां ।
अनिल : एक वर्ष हुआ कोई दुर्घटना हुई थी ।
सुरेन्द्र : हां महाराज ।
अनिल : तुम किसी चलती हुई सवारी पर से गिर पड़े थे ।
सुरेन्द्र : मैं बस से गिर पड़ा था ।
अनिल : उसकी चोट का निशान अब भी तुम्हारी दाहिनी जांघ पर है ।
सुरेन्द्र : यह तो सच है महाराज ।
अनिल : हम जो बताएंगे सच ही बताएंगे । तुम्हारे भाग्य में माता का सुख नहीं है, बचपन में ही तुम्हारी मां का स्वर्गवास हो गया था ।

सुरेन्द्र : हां, हां, यह भी ठीक ही है महाराज।

अनिल : और यह भी ठीक है कि एक बार तुम मरते-मरते बचे थे।

सुरेन्द्र : जी हां, यह भी सच है।

अनिल : और यह भी सच है कि सरला के विवाह से पहले तुम्हारे विवाह की बात-चीत और जगह पक्की हो गई थी। पर बाद में उसमें कोई बाधा आ गई।

सुरेन्द्र : आप तो सब कुछ जानते हैं महाराज।

अनिल : बावा तीनों कालों का हाल जानते हैं। तुम्हारी पत्नी में भी क्रोध अधिक है इसी कारण घर में शांति नहीं है।

सुरेन्द्र : आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।

अनिल : जिस घर में पति और पत्नी में कलह रहती है वह घर कभी फल-फूल नहीं सकता। उस घर से सुख शान्ति बहुत दूर रहते हैं।

सुरेन्द्र : अब आप से क्या छिपाना। मैं बहुत दुखी हूं।

अनिल : पर एक बात हैं बच्चा। तुम्हारी स्त्री के मन में मैल नहीं है। वो दिल से बुरी नहीं है। तुम्हारे घर में जो कुछ भी है वह उसी के चरणों का प्रताप है।

सुरेन्द्र : पर क्या जीवन भर ऐसे ही झगड़ा चलता रहेगा?

अनिल : जरा हाथ दिखाओ बच्चा।

सुरेन्द्र : यह लीजिए।

अनिल : तुम्हारी स्त्री पर तो बहुत बड़ा संकट आने वाला है।

सुरेन्द्र : कब?

अनिल : तीन महीने बाद।

सुरेन्द्र : क्या होगा तीन महीने बाद?

अनिल : जो हो जाए सो थोड़ा है।
सुरेन्द्र : फिर भी ?
अनिल : सच कहता हूं। बुरा तो नहीं मानोगे।
सुरेन्द्र : जी नहीं, आप सच-सच बता दीजिए।
अनिल : उसके ग्रह बहुत भारी हैं। आज से तीन महीनें बाद अष्टमी को सुबह नौ बजे बहुत बड़ा संकट आने वाला है। हो सकता है, तुम्हारी स्त्री इस संकट में ही चल बसे।
सुरेन्द्र : यह क्या कह रहे हैं महाराज !
अनिल : होनी को कौन टाल सकता है। इति होतव्यम् इति होतव्यम् भाव्वम् तद् भविष्यति।
सुरेन्द्र : कोई उपाय ?
अनिल : बाबा जाप करेंगे। यह जाप सफल होगा या नहीं, यह नहीं कह सकता।
सुरेन्द्र : आप जाप कीजिए। कितना खर्च होगा जाप में ?
अनिल : पांच रुपये।
सुरेन्द्र : यह लीजिए।
अनिल : इस नोट पर अपने हस्ताक्षर कर दो।
सुरेन्द्र : उस से क्या होगा ?
अनिल : मैं जो कहता हूं वो करो। हां, एक बात और सुनो। अगर तुमनें यह बात किसी को भी बताई तो हमारा जाप निष्फल हो जाएगा। तीनों बातों का ध्यान रखना।
सुरेन्द्र : वो क्या ?
अनिल : अपनी स्त्री से लड़ना नहीं। दफ्तर से सीधे घर आना और जहां भी जाना, अपनी स्त्री को साथ लेकर जाना। अच्छा अब हम चलते हैं।
सुरेन्द्र : बाबा अपना पता बता दीजिए। आप कहां मिल सकते हैं ?

अनिल : जब आवश्यकता होगी । हम स्वयं आ जाएंगे । अलख निरंजन । हां, एक बात याद रखना बच्चा उस अष्टमी को प्रातःकाल नारियल लाल कपड़े में लपेट कर किसी मंदिर में चढ़ा देना और नौ बजे से आधा घण्टा पहले चौकड़ी मार कर गायत्री मन्त्र का जाप करना, तुम्हारा कल्याण होगा ।

सुरेन्द्र : बहुत अच्छा महाराज ।

[अनिल चला जाता है । सुरेन्द्र सरला की फोटो की ओर देखता है । इतने में अनिल वापस आ जाता है ।]

अनिल : एक बात और है बच्चा ।

सुरेन्द्र : क्या आज्ञा है महाराज ?

अनिल : आज मंगल है ना ?

सुरेन्द्र : हां महाराज ।

अनिल : तुम्हारा जाप हम आज से ही शुरू कर देंगे ।

सुरेन्द्र : यह तो बहुत अच्छी बात है ।

अनिल : एक काम करो । यहां आसपास कोई पीपल है ।

सुरेन्द्र : मैं पता कर लूंगा ।

अनिल : वो मंदिर के पास पीपल है ना ।

सुरेन्द्र : हां महाराज, यहां से थोड़ी दूर है ।

अनिल : तो बस शीघ्र ही पीपल पर दूध के छींटे दे आओ । यह काम जाप से पहले होना चाहिए । मैं अपने आश्रम में पहुंच कर जाप शुरू कर दूंगा ।

सुरेन्द्र : मैं अभी जाता हूं महाराज ।

अनिल : भगवान तुम्हारा भला करेगा । अलख निरंजन ।

[अनिल चला जाता है । सुरेन्द्र फिर सरला का

फोटो देखने लगता है। इतने में राधा आ जाती है]

राधा : मैं तो पिंकी को उसकी सहेली के यहां छोड़ने गई थी।

सुरेन्द्र : गिलास में थोड़ा दूध ले आओ।

[राधा दूध लेने जाती है]

सुरेन्द्र : तीन महीने बाद। क्या सचमुच तीन महीने बाद···नहीं ऐसा नहीं होगा।

[राधा गिलास में दूध लाती है और सुरेन्द्र को दे देती है। सुरेन्द्र गिलास लेकर बाहर चला जाता है। राधा कमरे की कुछ चीजें ठीक करने लगती है।इतने में सरला आ जाती है।]

सरला : पिंकी आ गई क्या?

राधा : अभी नहीं बीवी जी,

सरला : जा तू उसे ले आ।

[राधा बाहर जाती है थोड़ी देर के बाद अनिल फिर साधु के भेष में आ जाता है।]

अनिल : जय भोले नाथ। कर भला, हो भला अन्त भले का भला।

सरला : बावा जी फिर आइएगा।

अनिल : बाबा एक द्वार पर एक बार ही आते हैं।

सरला : (चार आने देते हुए) यह लीजिए बाबा।

अनिल : भगवान तुम्हारा कल्याण करे। अपने पति की सेवा किया करो बहन, पति परमेश्वर होता है।

सरला : तब तो दुनिया में करोड़ों परमेश्वर हैं हर घर में कम से कम एक तो है ही।

अनिल : तुम अपने पिता की एक ही पुत्री हो।

सरला : जी।

अनिल : तुम्हारे एक भाई की मृत्यु हो चुकी है।

सरला : आपको कैसे मालुम।

अनिल	:	बाबा सात जन्म का हाल जानते हैं। जिस दिन तुम्हारा विवाह हुआ था उस दिन जोर से आंधी आई थी।
सरला	:	हाँ महाराज।
अनिल	:	विवाह के दो महीनें बाद ही तुम्हारे पति को अच्छी नौकरी मिल गई थी।
सरला	:	यह तो बिल्कुल ठीक है।
अनिल	:	एक वर्ष हुआ तुम्हारे पति किसी दुर्घटना के कारण घायल हुए थे।
सरला	:	हां महाराज, वो चलती बस से गिर पड़े थे।
अनिल	:	वो तो सूर्य उनकी रक्षा कर गया, वरना···
सरला	:	वरना क्या होता ?
अनिल	:	जो नहीं होना चाहिए था। अपना हाथ दिखाओ (हाथ देखकर) तुम्हारा पति तो बहुत नेक है।
सरला	:	महाराज वह तो रात-दिन लड़ते रहते हैं।
अनिल	:	बुरा न मानना बहन। तुम भी बहुत क्रोध करती हो।
सरला	:	वो मेरी परवा नहीं करते।
अनिल	:	गलत। वो तुम्हें बहुत चाहता है। उसकी सेवा किया करो। ऐसा पति बड़े भाग्य से मिलता है।
सरला	:	अब आप से क्या छिपाना महाराज, हमारा झगड़ा तो रात-दिन बढ़ता ही जाता है।
अनिल	:	यह तो बड़ा अनर्थ होने वाला है।
सरला	:	वो क्या महाराज ?
अनिल	:	भगवान का भजन करो बहन। उसी से कल्याण होगा। अब हम चलते हैं।
सरला	:	नहीं महाराज, मुझे बताइए क्या बात है ?
अनिल	:	क्या करोगी पूछ कर। करम गति टारे नहीं

टरै।

सरला : फिर भी क्या बात हैं महाराज !

अनिल : आज से तीन महीने के बाद अष्टमी को प्रातः काल नौ बजे तुम्हारे पति पर संकट आने वाला है।

सरला : कैसा संकट हैं महाराज।

अनिल : घोर संकट। हरी ओम तत् सत्। भगवान तुम्हारा कल्याण करे।

सरला : जल्दी बताइए महाराज।

अनिल : अगर यह समय निकल गया तो फिर तुम्हारें पति की बड़ी लम्बी आयु होगी।

सरला : तो क्या इनकी जान का खतरा है।

अनिल : हम ने कहा न घोर संकट है।

सरला : कोई उपाय ?

अनिल : हम जाप तो करेंगे पर मैं कह नहीं सकता कि संकट टलेगा या नहीं।

सरला : आप जाप जरूर कीजिए। जाप में जो कुछ खर्च होगा मैं दे दूंगी।

अनिल : केवल पांच रुपये।

सरला : केवल पांच रुपये !

अनिल : हां, केवल पांच। बाबा किसी को ठगते नहीं।

सरला : यह लीजिए।

अनिल : एक बात याद रखना बहन, अगर तुमने यह भेद किसी को समय से पहले बता दिया तो मेरा जाप निष्फल हो जायेगा।

सरला : मैं नहीं बताऊंगी महाराज।

अनिल : याद रखना जिस दिन तुमने यह बात किसी को बताई उसी दिन कोई दुर्घटना हो जाएगी।

सरला : नहीं महाराज, मैं बिल्कुल नहीं बताऊंगी।

अनिल : अपने पति को भी नहीं।

सरला : नहीं किसी को भी नहीं बताऊंगी।

अनिल : अच्छा एक बात और ध्यान से सुनो।

सरला : कहिए महाराज।

अनिल : तीन महीने तक हर सोमवार को पति के चरण दबाया करना।

सरला : इससे क्या होगा महाराज ?

अनिल : सोमवार को मैं खास मंत्र पढ़ूंगा।

सरला : आप कहां रहते हैं महाराज ?

अनिल : अपने भक्तों के हृदय में।

सरला : अगर आप के दर्शन करने हों तो ?

अनिल : हमें सब पता रहता है। आवश्यकता होने पर हम स्वयं ही चले आएंगे। जय भोले नाथ, हरी ओम् तत् सत्। एक बात और याद रखना। उस अष्टमी को सुबह एक नारियल लाल कपड़े में लपेट कर किसी मंदिर में चढ़ा देना और आधा घंटा पूर्व चौकड़ी मार कर गायत्री मंत्र का जाप करना।

सरला : बहुत अच्छा महाराज।

सरला : बावा जाप सफल हो जायेगा न ?

अनिल : कुछ कहा नहीं जा सकता। भगवान पर भरोसा रखो। जय भोलेनाथ।

[अनिल बाहर चला जाता है। सरला पसीना पोंछती हुई अन्दर चली जाती है।]

[पर्दा गिरता है।]

तीसरा अंक

[राधा खाने की मेज पर चीजें ठीक कर रही है। इतने में पिंकी अन्दर से आती है।]

राधा : पिंकी स्वेटर पहन जा।

पिंकी : ....अच्छा कहानी सुनाओ न राधा।

राधा : एक था राजा, एक थी रानी। राजा कहता हरा स्वेटर पहन जाओ तो रानी कहती लाल स्वेटर पहनो।

पिंकी : नहीं राधा। आजकल तो राजा कहता है जैसा रानी कहती है वैसा करो और रानी कहती है जैसा राजा कहता है वैसा करो। बिचारी राजकुमारी करे तो क्या करे ?

राधा : राजकुमारी को चाहिए कि दोनों का कहना माने।

पिंकी : घर में अब राजा और रानी में लड़ाई नहीं होती है। अच्छा मैं खेलने जा रही हूं।

राधा : बिटिया शटअप का क्या मतलब होता है।

पिंकी : चुप रहो।

राधा : इसमें चुप रहने की क्या बात है ?

पिंकी : शटअप का मतलब होता है चुप रहो।

[पिंकी बाहर चली जाती है। राधा फिर मेज ठीक करने लगती है। सरला आती है।]

सरला : वो आ गए क्या ?

राधा : अभी नहीं बीबी जी।

सरला : (घड़ी देखते हुए) अब आने ही वाले होंगे। आज सोमवार है न ?

राधा : हां बीबी जी।

राधा : बीबी जी आपके लिए चाय लाऊं।

सरला : नहीं। वो आयेंगे तो इकट्ठे ही पियेंगे। रात वो कह रहे थे कि दाल में नमक ज्यादा था। तुम आजकल ध्यान से काम नहीं करती।

राधा : बीबी जी दाल तो आपने भी खाई थी।

सरला : मेरी बात छोड़ो। अगर उन्हें नमक ज्यादा लगा तो ज्यादा ही होगा। दाल सब्जी में नमक उनके टेस्ट के मुताबिक होना चाहिए।

राधा : बीबी जी काफी खत्म हो गई है।

सरला : क्यों खत्म हो गई ? कब खत्म हो गई ?

राधा : सवेरे खत्म हो गई थी।

सरला : तो सुबह क्यों नहीं बताया। तू अच्छी भली जानती है कि शाम को वो कौफी पीते हैं। तू आजकल बहुत लापरवाह हो गई है।

राधा : इस वक्त तो चाय पी लेंगे। श्याम को काफी ले आना।

सरला : चाय क्यों पियेंगे ? जब वो कौफी पीना चाहते हैं तो कौफी पियेंगे। राधा तुझे क्या हो गया है ? आइन्दा चीज खत्म होने से पहले बता दिया करो, समझी।

राधा : अच्छा, बीबी जी।

सरला : जो वो कहते हैं उसे ध्यान से सुनाकर। उनका खास ख्याल रखा कर तू नहीं जानती वो कितने दुबले हो गए हैं, कमजोर हो गए हैं।

राधा : बाबूजी दुबले तो नहीं हुए।

सरला : तुझे क्या पता ? हे भगवान् घर वाले से ही

घर होता है। उनका सूट प्रेस करवा लाई। बोलती क्यों नहीं ?

राधा : आपकी साड़ी प्रेस करवा लाई हूं।

सरला : साड़ी को मार गोली। मैं पूछती हूं कि उनका सूट क्यों नहीं प्रेस करवाया ?

राधा : याद नहीं रही।

सरला : ईडियट। काम नहीं करना है तो वैसे कह दे। तू घर के मालिक का ही ख्याल नहीं करती तो और किसी की क्या परवाह करेगी। मैं कहे देती हूं कि आज से अगर उनके काम में कोई कमी रही तो तुझे घर से निकाल दूंगी। उनका सूट ले आ। मैं प्रेस करवा के लाती हूं।

राधा : मैं सवेरे करवा लाऊंगी।

सरला : अब तू रहने दे। उनके लिए कौफी भी तो लानी है। जा उनका सूट ले आ।

[राधा सूट लेने जाती है। सरला सुरेन्द्र का फोटो देखने लगती है। राधा सूट लाकर देती है।]

सरला : देख तकिए के गिलाफ बदल दे।

राधा : बहुत अच्छा।

[राधा अन्दर चली जाती है।]

सरला : (फोटो की तरफ देखकर) अब तो एक महीना ही रह गया। अगर यह संकट टल जाए तो मैं १०० रुपये गरीबों में बांट दूंगी।

[पिंकी का प्रवेश।]

पिंकी : ममी, ममी क्या पापा जी आ गए ?

सरला : बस आते ही होंगे।

पिंकी : ममी। कल मेरी फीस देनी है। पापा आएंगे तो उनसे कहूंगी कि कल मेरे स्कूल आएं।

सरला : पापा को मत कहना। उन्हें क्यों तकलीफ देती है। मैं ही तुम्हारे स्कूल आ जाऊंगी।

पिंकी : पापा से मैंने सवाल समझना हैं ।

सरला : नहीं । मैं तुझे समझा दूंगी । वो थके-हारे दफ्तर से आते हैं । तू उन्हें बहुत तंग करती है । रात उन्हें नींद आई हुई थी और तू उन्हें सोने नहीं दे रही थी । खबरदार जो उन्हें तंग किया । उनका कहना माना कर । जैसे वो कहें वैसे ही किया कर । तुझे पापा अच्छे लगते हैं न ।

पिंकी : बहुत अच्छे । वो तो मुझे बहुत प्यार करते हैं ।

सरला : तो बेटी भगवान् से प्रार्थना करो कि मेरे पापा की बहुत लम्बी उम्र हो कहो, शाबाश ।

पिंकी : हे भगवान् मेरे पापा की बहुत लम्बी उम्र हो । (सरला पिंकी को गले लगा लेती है और आंसू पोंछती है ।)

मम्मी तुम रोती हो, क्या पापा ने तुम्हें मारा है ।

सरला : नहीं बेटी नहीं । तेरे पापा तो बहुत अच्छे हैं ।

पिंकी : तुम रोती क्यों हो ?

सरला : मेरी आंख में तो मच्छर पड़ गया था । भगवान् न करे हम लोगों को रोना पड़े ।

पिंकी : ममी, फ्रिज कब लोगी ?

सरला : एक महीने और ठहर जा । भगवान् सबको राजी खुशी रखे तो उसके बाद फ्रिज ले लेंगे ।

पिंकी : ममी, मैं अभी आई ।

[पिंकी अन्दर चली जाती है ।]

सरला : इस डाइनिंग टेबल, इस सोफा सैट, इस कालीन, इन पर्दों और इन तस्वीरों से तो घर नहीं बनता, और न घर बनता है इस चार दीवारी से, इस घर की सबसे बड़ी सजावट और सबसे बड़ी रौनक तो वो हैं । वो न हों

तो इस घर में सन्नाटा छा जाएगा। अमावस की रात का सा। यह उदास हो जाएगा। शाम के पीले चांद की तरह और इस घर की हर चीज कांपती नजर आएगी एक उदास धुन की तरह। वो न हों तो इस घर में एक ऐसा अंधेरा छा जाएगा जिसे दुनिया की कोई रौनक, कोई रोशनी समेट नहीं सकेगी। नहीं, नहीं ऐसा नहीं होगा, ऐसा नहीं होगा।

पिंकी : ममी, ममी बाजार चलोगी।

सरला : हां चल, मुझे उनके लिए कौफी लानी है।

सरला : राधा, राधा।

राधा : जी।

सरला : वो आएं तो उन्हें कहना कि अभी थोड़ी देर में आती हूं।

राधा : बहुत अच्छा।

[राधा मेज़ पर प्याले रखती है। थोड़ी देर में सुरेन्द्र आ जाता है। राधा का मुंह दूसरी तरफ है वो उसे नहीं देखती है।]

सुरेन्द्र : राधा।

राधा : जा रे मेरे सरवैंट। मैं तेरे से नहीं बोलती। तू दोपहर को क्यों नहीं आया। मैं तो तेरी वाट जोहती रही। तू आता तो तुझे भी असली घी का हलुवा बना के खिलाती।

सुरेन्द्र : (क्रोध से) राधा।

राधा : (मुड़कर सुरेन्द्र को देखती है) हाय दइया, बाबूजी, मैं तो समझी।

सुरेन्द्र : क्या समझी?

राधा : मैं समझी कि मेरा माली आया है।

सुरेन्द्र : तो तू उसे हलवा बना के खिलाती है।

राधा : नहीं बाबूजी। एक जगह दोपहर को कीर्तन

था। वहां से हलवा मिला था।

सुरेन्द्र : बीबी जी आ गईं क्या ?

राधा : स्कूल से तो आ गई हैं। बाजार गई हैं।

सुरेन्द्र : क्या लेने ?

राधा : आपके लिए काफी।

सुरेन्द्र : वो थकी-हारी स्कूल से आई और तूने उन्हें कौफी लेने भेज दिया। तूने मुझे सुबह क्यों नहीं बताया। मैं ले आता। राधा तुझे क्या हो गया है। आइन्दा चीज खत्म होने से एक दिन पहले बताया कर।

राधा : बाबूजी वो बोर्नविटा भी खत्म हो गया। मैं बीबी जी को बताना भूल गई।

सुरेन्द्र : क्यों खत्म हो गया, कब खत्म हो गया ?

राधा : कल ही खत्म हो गया था।

सुरेन्द्र : तो कल क्यों नहीं बताया। राधा तुझे अच्छा भला पता है कि वो रोज रात को दूध में बोर्नविटा डालकर पीती है। तू बहुत लापरवाह हो गई है। वो सुबह कह रही थी कि दलिया ठीक नहीं बना था।

राधा : बाबू जी आपने भी तो खाया था।

सुरेन्द्र : मेरी बात छोड़ो। अगर वो कहती है ठीक नहीं था तो ठीक नहीं था। खाने की चीज उनके टेस्ट के मुताबिक ही बननी चाहिए।

राधा : बाबू जी।

सुरेन्द्र : जो वो कहती है उसे ध्यान से सुना कर। उनका खास ख्याल रखा कर। तू नहीं जानती कि वो कितनी दुबली हो गई हैं, कमजोर हो गई है।

राधा : बीबी जी दुबली तो नहीं हुई हैं।

सुरेन्द्र : शटअप। तुझे क्या पता ? मैं तुझे क्या बताऊं

हे भगवान्, घरवाली से ही घर होता है। सुबह उन्होंने तुझे गरम कपड़े ठीक से रखने को कहा था।

राधा : याद नहीं रही।

सुरेन्द्र : काम नहीं करना है तो वैसे कह दे। तू घर की मालकिन का ही ख्याल नहीं रखती है तो और किसी की क्या परवाह करेगी। मैं कहे देता हूं आज से अगर उनके काम में कोई कमी हुई तो मैं तुझे निकाल दूंगा।

[राधा अन्दर चली जाती है। सुरेन्द्र सरला की फोटो देखता है।]

सुरेन्द्र : अब तो एक महीना ही रह गया। अगर यह संकट टल जाए तो मैं सौ रुपये गरीबों में बांट दूंगा।

[पिंकी का प्रवेश।]

सुरेन्द्र : तू ममी के साथ गई थी?

पिंकी : हां।

सुरेन्द्र : वो कहां रह गई?

पिंकी : रास्ते में उन्हें शर्मा आंटी ने रोक लिया।

सुरेन्द्र : तुझ ममी अच्छी लगती है न?

पिंकी : बहुत अच्छी, वो तो मुझे बहुत प्यार करती हैं।

सुरेन्द्र : तो बेटी भगवान् से प्रार्थना कर कि तेरी ममी को बहुत बड़ी उमर हो।

[सुरेन्द्र पिंकी को गले लगा लेता है और फिर अपने आंसू पोंछता है।]

पिंकी : पापा तुम रोते हो। क्या ममी ने तुम्हें मारा है?

सुरेन्द्र : नहीं तेरी ममी तो बहुत अच्छी हैं।

पिंकी : तुम रोते क्यों हो?

सुरेन्द्र : मेरी आँख में मच्छर पड़ गया है।

पिंकी : पापा मच्छर बहुत खराब हैं।

सुरेन्द्र : चलो बेटी तुम्हारी ममी के लिए बोर्नवीटा ले आएं।

[सुरेन्द्र और पिंकी बाहर चले जाते हैं।]

[राधा हाथ जोड़कर कुछ प्रार्थना करती है। पीछे से फूलचन्द आ जाता है।]

फूलचन्द : तेरी इच्छा पूर्ण होवेगी।

राधा : हाय दइया। मैं तो समझी······

फूलचन्द : क्या समझी······

राधा : कुछ नहीं।

फूलचन्द : मैं सब समझ गया हूं।

राधा : वो क्या?

फूलचन्द : औरत भगवान् से दो ही चीज़ें मांगती हैं। अपने मर्द की जिंदगी और सौत की मौत।

राधा : तो मेरी सौत लावेगा।

फूलचन्द : अब क्या लाऊंगा? हां दो-चार साल पहले कहती तो सौतों के ढेर लगा देता।

राधा : और तू तो ढेर के नीचे ही दब जाता।

फूलचन्द : एक जमाना था जब गांव की सारी छोकरियां मंदिर में फूल चढ़ा के कहा करे थीं कि मेरी शादी फूलचन्द से हो जाए।

राधा : फिर क्या हुआ?

फूलचन्द : भगवान् ने तेरी सुन ली।

राधा : मेरी शादी तो वो हरिया से हो रही थी।

फूलचन्द : वो जो डंगरों का इलाज करे था।

राधा : हां।

फूलचन्द : तुझे मालूम है वो तुझसे क्यों शादी करना चाहवे था। बात यह थी कि वो डंगरों का इलाज करे था और उसके पास डंगर कोई

नहीं था। वो चाहवे था कि एक डंगर तो घर में ले ही आवे।

राधा : पर यो नहीं हुआ। डंगर की शादी तो डंगर से हो गई।

फूलचन्द : तेरा मतलब है मैं डंगर हूं।

राधा : तो क्या मैं डंगर हूं।

फूलचन्द : अरे मैं तो तेरा सरवैंट हूं।

राधा : मैं तेरी सरवैंटी।

फूलचन्द : अच्छा बता भगवान् से क्या मांग रही थी।

राधा : मैं तो यो कह रही थी कि बाबू जी और बीबी जी में फिर से झगड़ा चालू हो जाए।

फूलचन्द : वो क्यों ?

राधा : मुझे तो ऐसा लगे है कि अब मेरी नौकरी छूट जाएगी।

फूलचन्द : वो कैसे ?

राधा : पहले बीबी जी मुझे निकालने को कहती थीं तो बाबू जी कहते थे 'नहीं' और जो बाबू जी निकालने को कहते तो बीबी जी कहती 'नहीं'। अब तो जब से राजीनामा हुआ है दोनों ही कहे 'राधा तुझे निकाल देंगे।' मेरी तो आजकल आफत आ गई है।

फूलचन्द : पर राजीनामा हुआ कैसे ?

राधा : (बस एकदम ही कुछ हो गया। अच्छा तू चल बीबी जी आने वाली हैं अच्छा सुन एक पांच का नोट तो दे जा।

फूलचन्द : क्या करेगी ?

राधा : फिर बताऊंगी पहले नोट दे दे।

फूलचन्द : शनिचर को दस का नोट लिया था न।

राधा : वो तो कब का खर्च हो गया।

फूलचन्द : तुझे खर्च करना नहीं आता। तुझे पैसे की नहीं अक्ल की जरूरत हैं।

राधा : वो तो ठीक है, पर तेरे से तो वही चीज मांगनी चाहिए जो तेरे पास हो।

फूलचन्द : इस तरह खर्च करेगी तो कैसे काम चलेगा?

राधा : तू तो ऐसे कह रहा है जैसे तू पल्ले से दे रहा है।

फूलचन्द : क्या मतलब ?

राधा : मेरी तनख्वा तेरे से पाँच रुपये ज्यादा है।

फूलचन्द : ओह, तेरे दिमाग में भी यह बात आ गई।

राधा : इसमें कोई झूठ है ?

[अनिल अन्दर आता है और चुपचाप इनकी वातें सुनता है।]

फूलचन्द : अपनी तनख्वाह अपने पास रख लिया कर।

राधा : तू कौन-सा अपनी तनख्वाह मुझे देता है। वीवी जो कह रही थी कि औरत और मर्द के बरावर के हक हैं।

अनिल : तुम लोगों ने भी ड्यूट शुरू कर दिया। शाबाश!

फूलचन्द : नमस्ते वाबूजी।

अनिल : नमस्ते। क्या बात है ?

फूलचन्द : बात यो है बाबूजी। यो पिंकी से अंग्रेजी के दो-चार हरफ क्या सीख गई है अपने आपको मेम साहब समझने लगी है। वाबूजी बुरा न मानना तुम तो पढ़े-लिखे हो, मैं तो यो जानूं कि अंग्रेजी हम लोगों को हज़म नहीं होती। जहां अंग्रेजी सीखी कि अपनी पुरानी बातें सब भूल गए।

अनिल : मालूम होता है घर में और कोई नहीं हैं।

राधा : बीवी जी और बाबूजी दोनों बाहर गए हैं। बीबी जी बाबूजी की काफी लेने गई हैं।

अनिल : और बाबूजी ?

राधा : बाबूजी बीबी जी के लिए वोर्नविटा।

अनिल : भई वाह !

फूलचन्द : जै राम जी की बाबूजी।

[फूलचन्द बाहर चला जाता है।]

राधा : आपके लिए चाय लाऊं ?

अनिल : नहीं भई। मैं अभी चाय पी के आया हूं।

[पिंकी का प्रवेश]

पिंकी : नमस्ते, अंकल जी।

अनिल : नमस्ते, तेरे पापा नहीं आए ?

पिंकी : पीछे आ रहे हैं।

अनिल : तेरे डैडी ममी का क्या हाल है ?

पिंकी : ठीक हैं।

अनिल : अब लड़ाई तो नहीं होती ?

पिंकी : नहीं, अब तो ममी पापा की फोटो देखती रहती हैं और पापा ममी की। हां अंकल यहां एक मच्छर आ गया है जो बहुत तंग करता है। कभी ममी की आंख में पड़ जाता है और कभी पापा की।

अनिल : (हंसकर) यह बात है।

पिंकी : पहले पापा कहते थे पढ़ो तो ममी कहती थी सो जाओ और जब ममी कहती थी पढ़ो तो पापा कहते थे कि सो जाओ। अब दोनों मीठी-मीठी बातें करते रहते हैं और मुझे कहते हैं, जाओ पिंकी बाहर खेलो।

[सुरेन्द्र का प्रवेश।]

सुरेन्द्र : हैलो, अनिल। आज तो बहुत दिनों के बाद आए हो।

अनिल : उस दिन के बाद तुमने कभी खाने पर बुलाया ही नहीं। वैसे एक बार मैं और भी आया था लेकिन···

सुरेन्द्र : लेकिन क्या···? मैं घर पर नहीं था। सरला तो होगी ?

अनिल : हां, भाभी तो थी लेकिन उन्होंने मुझे पहचाना नहीं।

सुरेन्द्र : यह कैसे हो सकता है ?

अनिल : यार रहने दे, कभी-कभी तो तू भी नहीं पहचानता।

सुरेन्द्र : क्यों बातें बना रहा है (पिंकी से) जाओ बेटे बाहर खेलो।

[अनिल हंसता है।]

सुरेन्द्र : क्या बात है ?

अनिल : पिंकी मुझसे अभी कह रही थी कि ममी और पापा मीठी-मीठी बातें करते रहते हैं और मुझे कहते हैं बाहर खेलो।

सुरेन्द्र : बहुत शैतान हो गई है।

अनिल : मालूम होता है आजकल ड्यूट का प्रोग्राम बन्द हो गया है।

सुरेन्द्र : क्या रखा है लड़ाई-झगड़े में !

अनिल : ड्यूट तो बुरी नहीं है। अगर एक ही स्वर में हो।

सुरेन्द्र : तुझ से क्या छिपाना, आजकल वो मेरा बड़ा ख्याल रखती है। पता नहीं उसे एकदम ही कुछ हो गया है। एकदम बदल गई है।

अनिल : मुझे सब पता है सब मालूम है।

सुरेन्द्र : क्या मालूम है ?

अनिल : हम अन्तर्यामी हैं।

सुरेन्द्र : मजाक छोड़ो। सच-सच बता तुझे क्या मालूम

है ।

अनिल : वो इसलिए बदल गई है कि तुम भी बदल गए हो ।

सुरेन्द्र : क्या कहूं दोस्त वो मुझे बहुत चाहती है ।

अनिल : देखते जाओ वो तो तुम्हारे चरण दबाएगी ।

सुरेन्द्र : दबाएगी नहीं यार, दबाती है। (ठंडी सांस लेकर) पर एक बात है ।

अनिल : वो क्या ?

सुरेन्द्र : कुछ नहीं यार कुछ नहीं ।

अनिल : कुछ तो है ?

सुरेन्द्र : नहीं कोई बात नहीं। मैं तो यूं ही कह रहा था ।

अनिल : अबे हम से क्या छिपाता है । हम सब समझ गए। पिंकी का कोई भाई बहन आने वाला है। इसमें परेशानी की क्या बात है । तेरे तो बस अभी एक पिंकी ही हैं ।

सुरेन्द्र : यह बात नहीं है ।

अनिल : तो और क्या है ?

सुरेन्द्र : तू मत पूछ तो अच्छा है ।

अनिल : तो रहने दे । अपने राम तो चलते हैं ।

सुरेन्द्र : बैठ यार, जल्दी क्या है ?

अनिल : बात यह है कि मेरे एक रिश्तेदार की पत्नी परसों गुजर गई । उसके अफसोस करने जाना है । एकदम हार्ट फेल हो गया । बिचारे के दो छोटे-छोटे बच्चे हैं ।

सुरेन्द्र : यह तो बहुत बुरा हुआ ।

अनिल : सब किस्मत के खेल हैं । वैसे उसके पति को इसका पता था ।

सुरेन्द्र : वो कैसे ?

अनिल : एक साधु ने उसे चार महीने पहले बता दिया

था ।

सुरेन्द्र : क्या बताया था ?

अनिल : उसने उसका हाथ देखकर ही कह दिया था कि तुम्हारी पत्नी की मृत्यु आज से चार महीने के बाद इस तारीख को इतने बजे हो जाएगी। सच कहता हूं, बिल्कुल उसी दिन उसी समय उसका हार्ट फेल हो गया।

सुरेन्द्र : सच यार ?

अनिल : हां, बिल्कुल सच है। उसने तो उपाय भी बताया था लेकिन उसके आदमी ने परवाह नहीं की। उसने जाप के लिए उससे सिर्फ पांच रुपये मांगे थे, उसने वो भी नहीं दिए। अब पछताता है।

सुरेन्द्र : (घबराकर) साधु कौन था। कैसा था ?

अनिल : मैंने तो देखा नहीं। शायद बाबा मोचनानन्द नाम बताया था।

सुरेन्द्र : मोचनानन्द! यह तो वही साधु है। दोस्त तुझे क्या बताऊं मुझे भी एक साधु ने यही बताया है।

अनिल : क्यों मजाक करता है यार।

सुरेन्द्र : मजाक नहीं, सच कहता हूं दोस्त। उसने मुझ से कहा कि अगले महीने की अष्टमी को तेरी भाभी चल बसेगी।

अनिल : हे भगवान्, उसने कोई उपाय बताया।

सुरेन्द्र : उसने जाप के लिए पांच रुपये मांगे थे वो तो मैंने दे दिए थे।

अनिल : तो बस जैसा उसने कहा था वैसा ही करते जाओ।

सुरेन्द्र : उसने कहा था लड़ना नहीं, इकट्ठे भोजन करना और उसे हर जगह साथ ले के जाना।

मैं बिल्कुल उसके कहने के मुताबिक काम कर रहा हूं। सच कहता हूं दोस्त मैं उसे बचाने के लिए अपना सब कुछ दे सकता हूं। जरा सोचो दोस्त उसके बिना पिंकी का क्या हाल होगा ?

अनिल : घबराओ नहीं, वो बहुत पहुंचा हुआ साधु है। उसके जाप से सब कुछ ठीक हो जाएगा।

सुरेन्द्र : उसने कहा था किसी को बताना नहीं। मैंने तेरे सिवाय अब तक किसी से यह बात नहीं की हैं।

अनिल : इसमें कोई हर्ज नहीं। बात यह हैं कि यह साधु बड़े समझदार होते हैं। उसने यह तो इसलिए कहा होगा कि भाभी को न पता लगे। तुम खुद ही सोचो, अगर उसे पता लग जाए तो न मरती हो तो मर जाए।

सुरेन्द्र : यह तो ठीक है।

अनिल : लेकिन यह और किसी को न बताना।

सुरेन्द्र : नहीं, बिल्कुल नहीं बताऊंगा। बाबा मोचनानंद हमारा कल्याण करना। यह भी तो पता नहीं कि वो कहां रहते हैं ?

अनिल : वो किसी को अपना पता नहीं बताते। वैसे सुना है कि सोमवार को शाम को वो उसी पीपल के आस-पास घूमते हैं।

सुरेन्द्र : सोमवार तो आज ही है क्या इस समय वो वहां होंगे।

अनिल : हो सकता है हों।

सुरेन्द्र : तू बैठ यार, मैं अभी हो के आता हूं।

अनिल : मैं भी चलूं।

सुरेन्द्र : नहीं यार। उन्होंने कहा था किसी को बताना नहीं। तू यहीं बैठ मैं अभी आया। जाइयो नहीं, तुझे मेरी कसम।

[सुरेन्द्र चला जाता है ।]

अनिल : बेटा अब आए रास्ते पर। वैसे मैं लाख समझाता रहा पर एक न सुनी। हमको दुआएं दो तुम्हें कातिल बना दिया।

[सरला का प्रवेश ।]

अनिल : नमस्ते भाभी।

सरला : बैठिए वह भी अभी आते ही होंगे। मैं आपके लिए चाय लाती हूं।

अनिल : सच कहता हूं इस वक्त कुछ भी खाने को जी नहीं कर रहा है।

सरला : क्यों क्या बात है ?

अनिल : क्या बताऊं भाभी, मेरे एक रिश्तेदार थे। परसों अचानक ही उनका हार्ट फेल हो गया।

सरला : क्या उमर थी उनकी……

अनिल : यही कोई चालीस साल। बिचारे के दो छोटे-छोटे बच्चे थे।

सरला : यह तो बहुत बुरा हुआ।

अनिल : औरत लाख पढ़ी-लिखी हो, कमाती हो। लेकिन बिना आदमी के उसकी जिन्दगी दूभर हो जाती है।

सरला : यह तो तुम ठीक कहते हो भइया। औरत औरत ही है। बिना आदमी के उसकी कोई जिन्दगी नहीं।

अनिल : पर एक बात है भाभी, उसकी बीवी को इस बात का पता था।

सरला : वो कैसे ?

अनिल : उसे एक साधु ने चार महीने पहले उसका हाथ देखकर कह दिया था 'तुम्हारे पति पर घोर संकट आने वाला है। उसकी जान का खतरा है। यह संकट इस तारीख को इतने बजे

आएगा। सच कहता हूं भाभी बिल्कुल उसी दिन ठीक उसी समय उसका हार्ट फेल हो गया।

सरला : सच ?

अनिल : बिल्कुल सच। उसने तो उपाय भी बताया था लेकिन उसने परवाह नहीं की। उसने सोचा था ऐसे ठगने वाले साधु पचासों फिरते हैं। साधु ने जाप के लिए पांच रुपये मांगे थे, उसने वो भी नहीं दिए। अब तो बहुत पछताती है।

सरला : साधु कौन था ? कैसा था।

अनिल : मैंने तो देखा नहीं। शायद बाबा मोचनानन्द नाम बताया था। बात-बात में इति होतव्यम् इति होतव्यम् कहता था ?

सरला : यह तो वही साधु है, हे भगवान्। भइया। मैं तुम्हें क्या बताऊं मुझे तो आजकल नींद नहीं आती है। रात दिन चिन्ता लगी रहती है। न कुछ खाने को जी करता है और न पीने को।

अनिल : क्या बात है भाभी ?

सरला : मुझे भी एक साधु ने यही बताया है। उसने मेरा हाथ देखा और कहा तुम्हारे पति पर तीन महीने बाद घोर संकट आने वाला है। दो महीने तो गुजर गए। अब एक महीना और रह गया है। अगले महीने की अष्टमी खतरनाक है।

अनिल : उसने कोई उपाय बताया था।

सरला : मुझसे उसने जाप के लिए पांच रुपये मांगे थे वो तो मैंने उसे दे दिए थे और जैसा उसने कहा था बिल्कुल वैसे ही करती हूं। मैं उनका खाना खुद बनाती हूं उनके कपड़े धोती हूं।

अगर उन्हें कुछ हो गया भैया ? (रोने लगती है।)

अनिल : रोओ नहीं भाभी, तसल्ली रखो। वो बहुत पहुंचा हुआ साधु है। उसका जाप जरूर सफल होगा। उसने और कुछ कहा था।

सरला : उसने कहा था सोमवार को पांव दबाया करना। मैं तो दो घंटे रोज उनके पैर दबाने को तैयार हूं। पर वो दबाने ही नहीं देते। वो मेरे पैर दबाने लगते हैं।

अनिल : चिन्ता न करो भाभी सब ठीक हो जाएगा।

सरला : हां उन्होंने कहा था किसी को बताना नहीं। सच कहती हूं मैंने और किसी को नहीं बताया।

अनिल : मुझे बताने में कोई हर्ज नहीं है। सुरेन्द्र को न बताइएगा।

सरला : नहीं, उन्हें बताने के लिए तो वो बिल्कुल ही मना कर गए थे।

अनिल : बात है भी ठीक। अगर किसी आदमी को इस बात का पता लग जाए तो उसका हार्ट तो वैसे ही फेल हो जाएगा। वो न मरता हो तो भी मर जाएगा।

सरला : (रोते हुए) नहीं, नहीं। ऐसा न कहो भइया।

अनिल : भगवान् पर भरोसा रखो सब ठीक हो जाएगा। मैं चलता हूं।

सरला : आप उनसे नहीं मिलेंगे।

अनिल : मैं फिर आ जाऊंगा।

सरला : अच्छा भइया, आते-जाते रहना। मैं आजकल बहुत घबराई हुई हूं।

अनिल : मैं आता रहूंगा नमस्ते।

सरला : नमस्ते।

[अनिल चला जाता है।]

सरला : हे भगवान् मेरी बच्ची पर तरस खाना।

[पिंकी बाहर से आती है। सरला पिंकी को गले से लगा कर रोने लगती है।]

पिंकी : क्या हुआ ममी ?

सरला : कुछ नहीं बेटी।

[पिंकी को लेकर अन्दर चली जाती है। थोड़ी देर बाद सुरेन्द्र आता है और सोफे पर चुपचाप बैठ जाता है। पिंकी अन्दर से आती है।]

पिंकी : पापा क्या हो गया है ?

सुरेन्द्र : मेरा सिर दर्द कर रहा है। यह लो एक रुपया अपने लिए चाकलेट ले आओ। जाओ बेटी जाओ।

[पिंकी बाहर चली जाती है। सुरेन्द्र फिर बैठ जाता है। सरला आती है और वो भी चुपचाप बैठ जाती है।]

सरला : हाँ। आपने कौफी पी ली ?

सुरेन्द्र : नहीं। इस वक्त तो कुछ भी खाने को जी नहीं चाहता।

सरला : (घबराकर) क्यों तबियत तो ठीक है ?

सुरेन्द्र : हां। तुमने चाय पी ली ?

सरला : इस वक्त मेरा भी मन नहीं कर रहा है।

सुरेन्द्र : (घबराकर) क्यों तबियत तो ठीक है ?

सरला : हां !

[थोड़ी देर दोनों चुप हो जाते हैं।]

सुरेन्द्र : सरला तुम चुप क्यों हो ?

सरला : नहीं तो।

सुरेन्द्र : तो कुछ कहो। कोई बात करो।

सरला : तुम्हीं कुछ कहो न।

सुरेन्द्र : मैं चाहता हूं कि तुम्हारी एक फोटो एनलार्ज करवा कर इस कमरे में लगाई जाए।

सरला : क्यों ?
सुरेन्द्र : बस यूं ही ।
सरला : मेरी फोटो छोड़ो । मैं भी तुम से यही कहने वाली थी कि अपनी एक अच्छी-सी फोटो खिचवाओ और उसे बड़ी करवा लो ।
सुरेन्द्र : वो क्यों ।
सरला : बस यूं ही । एक बात पूछूं ?
सुरेन्द्र : पूछो ।
सरला : आजकल तुम कुछ सोच में रहते हो। कोई खास बात है ?
सुरेन्द्र : नहीं। बस यूं ही । एक बात मैं भी पूछूं ?
सरला : पूछो ।
सुरेन्द्र : कल सुबह उठकर तुम बड़े गौर से मेरी तरफ देख रही थीं । तुम समझती थीं कि मैं सो रहा था, लेकिन मैं जाग गया था । सच-सच बताना तुम ऐसे क्यों देख रही थीं ?
सरला : बस यूं ही ।
सुरेन्द्र : बहन जी की चिठ्ठी आई है । शायद वो अगले हफ्ते यहां आएं ।
सरला : चलो अच्छा है तुमसे मिल जाएंगी । मेरी मानो तो तुम अपने मामा जी को भी लिख दो कि तुम से आकर मिल जाएं ।
सुरेन्द्र : वो क्यों ?
सरला : बस यूं ही । एक बात बताओ, आजकल तो तुम दफ्तर से बहुत जल्दी आ जाते हो, पहले क्या बात थी ?
सुरेन्द्र : कभी तो दफ्तर का काम होता था, पर अक्सर मैं दोस्तों से गप्पें लगाता रहता था । और तुम्हें कह देता था कि दफ्तर में देर हो गई ।

सरला : इस बात पर भी हम लोगों का झगड़ा होता था।

सुरेन्द्र : मैं मानता हूं गलती मेरी थी। मुझे उन दिनों बहुत गुस्सा आता था।

सरला : मेरी भी गलती थी। मुझे भी उन दिनों बहुत गुस्सा आता था। मैं ज़रा-ज़रा-सी बात पर नाराज़ हो जाती थी।

सुरेन्द्र : मैं अपनी गलती मानता हूं।

सरला : तुम्हारी नहीं, गलती मेरी थी।

सुरेन्द्र : नहीं गलती मेरी थी।

सरला : वो वक्त ही बुरा था। न तुम्हारी गलती थी और न मेरी।

[दोनों हंसते हैं।]

सरला : अच्छा तो अब जूते उतार दो और इधर पांव रखो।

सुरेन्द्र : वो क्यों ?

सरला : बस यूं ही।

सुरेन्द्र : (पांव मेज पर रखता है) सरला पैर दबाती है।

सुरेन्द्र : न मैं थका हुआ हूं और न मेरे पांव में दर्द है।

सरला : न सही।

सुरेन्द्र : मुझे यह अच्छा नहीं लगता।

सरला : क्यों ?

सुरेन्द्र : बस यूं ही।

सरला : इसमें तुम्हारा कोई नुकसान है ?

सुरेन्द्र : नहीं।

सरला : तो फिर क्यों मना करते हो ?

सुरेन्द्र : बस यूं ही।

[सरला पैर दबाती है। सुरेन्द्र, सरला के पैर दबाने लगता है। राधा आती है।]

राधा : हाय दइया।

[रंगमंच पर अन्धेरा हो जाता है, और कुछ क्षण के बाद रंगमंच पर हल्की-सी रोशनी होती है।]

[रंगमंच पर बहुत हल्की रोशनी है। नेपथ्य से यह आवाज आती है।]

[आज से तीन महीने बाद अष्टमी को ९ बजे तुम्हारे पति पर घोर संकट आने वाला है। घोर संकट। उस अष्टमी को मन्दिर में नारियल चढ़ा कर आधे घंटा पहले गायत्रीमंत्र का जाप करना। भगवान तुम्हारा कल्याण करेंगे।]

[रंगमंच पर धीरे-धीरे प्रकाश हो जाता है। इतने में सरलाहाथ में लाल कपड़े में लिपटा हुआ नारियल लिए आती है।]

सरला : (घड़ी देखकर) बस चालीस मिनट और रह गये हैं। हे भगवान, हे बाबा मोचनानन्द, मुझ पर दया करना, मेरी छोटी बच्ची पर तरस खाना। राधा राधा!

राधा : (अन्दर से) आई बीबी जी।

सुरेन्द्र : (नेपथ्य से) सरला, सरला, तुम कहां हो।

सरला : मैं यहां हूं।

सुरेन्द्र : (नेपथ्य से) क्या कर रही हो। (सरला नारियल सोफे की गद्दी के नीचे छिपा देती है और झट से कुर्सी पर बैठ जाती है।)

[सुरेन्द्र का प्रवेश]

सुरेन्द्र : तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है?

सरला : नौ बजने में अड़तीस मिनट। तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है?

सुरेन्द्र : नौ बजने में चालीस मिनट। मैं समझा मेरी घड़ी खड़ी हो गई है। तुम्हारी तबियत तो

ठीक है ?

सरला : हां, मैं तो ठीक हूं। तुम ठीक हो न ?

सुरेन्द्र : हां, हां। बिल्कुल ठीक हूं।

[सुरेन्द्र अन्दर चला जाता है। राधा अन्दर से आती है।]

सरला : देख राधा यह नारियल सामने मंदिर में चढ़ा आ। किसी को देना नहीं, अपने आप हाथ जोड़ कर चढ़ा देना।

राधा : बीबी जी बात क्या है, पहले तो उसने…

सरला : जो मैं कहती हूं वो कर। देख किसी को बताना नहीं, बाबू जी को भी नहीं।

राधा : बहुत अच्छा बीबी जी।

सरला : पिंकी कहां है ?

राधा : वो स्कूल को तैयार हो रही है।

सरला : वो आज स्कूल नहीं जाएगी। अच्छा, तू तो जल्दी से मंदिर जा।

[राधा नारियल लेकर बाहर चली जाती है। इतने में पिंकी बस्ता लेकर आ जाती है।]

सरला : तू आज स्कूल मत जा।

पिंकी : ममी, मेरा तो आज इम्तहान है।

सरला : हां, तेरे तो आज से इम्तहान शुरू हैं। अच्छा तो जा। भगवान करे तू शाम को हंसती खेलती वापिस आए।

पिंकी : ममी टाटा।

सरला : पापा को टाटा की।

पिंकी : नहीं।

सरला : पापा से अच्छी तरह मिलकर जाओ। उन्हें प्यार करके आओ।

पिंकी : पापा, पापा ?

[सरला अन्दर चली जाती है। सुरेन्द्र आ जाता

है।]

सुरेन्द्र : तू स्कूल जा रही है ?

पिंकी : आज तो मेरा इम्तहान है।

सुरेन्द्र : इम्तहान है तो जा। भगवान करे शाम को हंसती खेलती वापिस आए।

[सुरेन्द्र पिंकी को गले लगाता है, प्यार करता है। पिंकी बाहर चली जाती है। सुरेन्द्र अन्दर आता है और नारियल लाल कपड़े में लिपटा हुआ है। लेकर बाहर जाने लगता है। इतने में सरला आ जाती है।]

सरला : आप कहां जा रहे हैं ?

सुरेन्द्र : कहीं नहीं। (नारियल सोफे की दूसरी कुर्सी की गद्दी के नीचे छिपा देता है।) कहीं नहीं।

सरला : आपने चाय नहीं पी।

सुरेन्द्र : जी नहीं कर रहा है। तुमने भी तो कुछ नहीं खाया।

सरला : मेरा मन नहीं कर रहा है। मैं तुम्हें आज दफ्तर नहीं जाने दूंगी।

सुरेन्द्र : मैं आज दफ्तर कैसे जा सकता हूं। पर तुम्हें भी स्कूल नहीं जाने दूंगा।

सरला : मैं आज स्कूल नहीं जाऊंगी। मैं यह अर्जी लिख रही थी। राधा के हाथ मिसेज वर्मा को भिजवा दूंगी।

सुरेन्द्र : मैं भी अपनी अर्जी ताराचन्द जी को दे आता हूं

सरला : नहीं, मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूंगी। अर्जी राधा के हाथ भिजवा देना।

सुरेन्द्र : अच्छा मैं अर्जी लिखकर लाता हूं।

[राधा बाहर से आती है। सरला राधा से पूछने के लिए उसके पास जाती है। सुरेन्द्र अपना नारियल लेकर अन्दर जाने लगता है।]

सरला : नारियल दे आई ।
राधा : हां बीबी जी । पुजारी जी पूजा कर रहे थे। उन्होंने खुद ले लिया और यह प्रसाद दिया है।

[सरला पीछे देखती है और उसे देखकर सुरेन्द्र नारियल झट से सोफे के पीछे रख देता है।]

सरला : जाओ अर्जी लिखलाओ न ।

[सुरेन्द्र अन्दर चला जाता है। सरला इधर-उधर घूमती है और वो अचानक सुरेन्द्र के नारियल को देखती है और उसे उठा लेती है।]

सरला : (क्रोध से) राधा, राधा ।
राधा : जी बीबी जी ।
सरला : तू नारियल मंदिर में देकर आई है ?
राधा : हां बीबी जी ।
सरला : क्यों झूठ बोलती है।
राधा : राम कसम बीबी जी ।
सरला : क्यों झूठी कसम खाती है। नारियल तो यह रहा ।

[सरला नारियल दिखाती है ।]

सरला : यह वही नारियल है न ?
राधा : हाय दइया ! बीबी जी मैं क्या बताऊं ?
सरला : चोर कहीं की। यह नारियल तूने यहां छिपा दिया कि शाम को घर लेती जाएगी ।
राधा : मैं सच कहती हूं बीबी जी ।
सरला : तुझे नारियल चाहिए तो मैं तुझे सौ नारियल दे सकती हूं। तू नहीं जानती तूनें क्या किया है। यह मेरी जिन्दगी का सवाल है जा चली जा दूर हो यहां से ।

[राधा अन्दर चली जाती है ।]

सरला : बाबा मोचनानन्द माफ करना ।

[घड़ी देखकर] ओह मैं क्या करूं। मैं खुद ही यह नारियल लेकर जाती हूं।

[सरला नारियल लेकर जाने लगती है कि सुरेन्द्र हाथ में अर्जी लेकर आ जाता है। सरला सुरेन्द्र को देखकर नारियल कुर्सी की गद्दी के नीचे छिपा देती है।]

सुरेन्द्र : क्या हुआ, क्या गिर गया ?

सरला : जूड़े की सुई नीचे गिर गई थी।

सुरेन्द्र : तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है।

सरला : आठ बज कर पैंतीस मिनट।

सुरेन्द्र : मेरी घड़ी में तैंतीस मिनट हुए हैं। मुझे एक गिलास पानी ला दो।

सरला : क्यों क्या हुआ ? तुम्हारी तबियत तो ठीक है ?

[सरला पानी लेने चली जाती है। सुरेन्द्र नारियल ढूंढ़ता है।]

सुरेन्द्र : यह क्या हुआ। नारियल कहां चला गया ? अब क्या होगा ? बाबा मोचनानन्द माफ करना अब तुम्हीं बताओ मैं नारियल कैसे भिजवाऊं। आधा घण्टा पहले तो गायत्री मन्त्र का जाप भी करना है।

[सरला का प्रवेश]

सुरेन्द्र : कुछ नहीं।

सरला : बात यह है कि…

सुरेन्द्र : क्या है ?

सरला : कुछ नहीं।

सुरेन्द्र : मेरे एक दोस्त ने मुझे एक योगासन बताया है। मैं वो करना चाहता हूं। तुम तो जानती हो मेरे पेट में गैस बनती है। यह उसी का

इलाज है।

सरला : गैस की तो मुझे भी शिकायत है।

सुरेन्द्र : कब से ? पहले तो तुमने कभी नहीं बताया।

सरला : बस यूं ही। मुझे भी मेरी एक सहेली ने एक योगासन बताया है।

सुरेन्द्र : अच्छा तो तुम दूसरे कमरे में और मैं...

सरला : यह नहीं हो सकता। तुम मेरे पास ही रहो।

सुरेन्द्र : अच्छा तो ठीक है। दोनों ही इस कमरे में अपना-अपना योगासन करते हैं।

[सोफे की एक कुर्सी पर सुरेन्द्र चौकड़ी मार कर गायत्री मन्त्र का जाप करने लगता है। और सोफे की दूसरी कुर्सी पर सरला बैठ कर गायत्री मन्त्र का जाप करने लगती है। थोड़ी देर के बाद दोनों एक-दूसरे की तरफ चोरी से देखते हैं।]

सरला : क्या बात है ?

सुरेन्द्र : कुछ नहीं।

सरला : तुम कुछ बेचैन हो।

सुरेन्द्र : बस यूं ही तबियत कुछ घबरा रही है।

सरला : क्या कहा, तबियत घबरा रही है, हे भगवान ! (एक दम उठती है और फिर गिर पड़ती है और रोने लगती है।) डाक्टर को बुलाओ।

सुरेन्द्र : डाक्टर को। क्या हुआ तुम्हें ?

(सुरेन्द्र भी अपनी कुर्सी से उठ कर सरला की तरफ बढ़ता है और गिर पड़ता है और रोने लगता है।)

सरला : कोई डाक्टर को बुलाओ।

[सुरेन्द्र उठने की कोशिश करता है, सरला उसे पकड़ लेती है।]

सुरेन्द्र : तुम नहीं। तुम लेट जाओ। हिलो नहीं। मैं डाक्टर को बुलाती हूं।

[अनिल साधु के भेष में प्रवेश करता है।]

अनिल : अलख निरंजन।

सुरेन्द्र सरला : बाबा मोचनानन्द।

सुरेन्द्र : बाबा जी नारियल नहीं भिजवा सका।

सरला : बाबा जी मैं नारियल नहीं भिजवा सकी। (सुरेन्द्र से) तुम जरा अन्दर चले जाओ। मुझे महात्मा जी से कुछ बात करनी है।

सुरेन्द्र : मैं कहता हूं तुम अन्दर चली जाओ। मुझे इनसे कुछ पूछना है।

अनिल : तुम दोनों ही बात कर सकते हो। आंखें बंद करो।

[सरला और सुरेन्द्र आंखें बन्द कर लेते हैं।]

अनिल : खबरदार, जो आंखें खोलीं। तुम्हारे जाप सफल हो गये हैं। हाथ फैलाओ।

अनिल : अपनी नकली दाढ़ी उतार कर सुरेन्द्र के हाथ पर और नकली जटा उतार कर सरला के हाथ पर रख देता है और स्वयं सोफे के ऊपर खड़ा हो जाता है। अपने दोनों हाथों में पांच के नोट लेकर हाथ फैला लेता है। हां, अब आंख खोल सकते हो।

सुरेन्द्र सरला : बाबा जी।

[सुरेन्द्र पीछे देखता है।]

सुरेन्द्र : अरे तू। (अनिल मंच पर भागता है और सुरेन्द्र उसके पीछे इतने में।)

[पर्दा गिरता है।]

